[illegible] के [illegible] का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय

हिन्दी कहानी का परिचय --

भारतीय साहित्य में वेदो, उपनिषदों, संस्कृत और बौध्द जातकों में अनेक कहानियाँ देखने को मिलती हैं। हिन्दी के मध्य युग में भी कई कहानियाँ लिखी गई जिन पर फारसी के वासनात्मक प्रेम का प्रभाव स्पष्ट है। कुछ आलोचकोंने इन्शा अल्ला खाँ की ` रानी केतकी की कहानी ` को हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी माना है, किन्तु सच यह है कि उसमें आधुनिक कहानी के लक्षण ठीक नहीं बैठते। इसमें मध्यकालीन किस्सागोई की स्पष्ट छाप है और एक अजीब सी सामाजिक तटस्थता है। दूसरी बात यह भी है कि इसमें आधुनिक कहानी की किसी अविच्छिन्न परम्परा का प्रवर्तन भी नहीं हुआ। इसके अनन्तर राजा शिवप्रसाद सितारे - हिन्द की उपदेशात्मक कहानी ` राजा भोज का सपना ` तथा भारतेन्दु की हास्यरस प्रधान कहानी ` अद्भुत अपूर्व सपना ` दृष्टिगोचर होती है किन्तु इन दोनों में लेखक के दृष्टिकोण का अभाव है। सन १९०० में प्रयाग से सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन, हुआ, जिसमें अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुई - गोस्वामी किशोरीलाल की इन्दुमती, गुलबहार, मास्टर भगवानदास, प्लेग की चुड़ैल, रामचंद्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष का समय, गिरिजादत्त वाजपेयी की पँडित और पँडितानी, बंगमहिला, दुलाई-वाली, वृन्दावनलाल वर्मा की सखी बन्ध माई, मैथिली की नकली किला, निन्यानवे का फेर आदि।

हिन्दी के कुछ विद्वानोंने गोस्वामी किशोरी लाल की ` इन्दुमती ` को हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी स्वीकार किया है जब कि कतिपय अन्य विद्वानों ने उक्त कहानी पर शेक्सपियर के ` टेम्पेस्ट ` नाटक का अत्यधिक प्रभाव दर्शाते हुए बंगमहिला दुलाईवाली कहानी को हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी सिध्द किया है। इस काल में प्रसादजी की ` ग्राम ` कौशिक की ` रक्षाबन्धन ` चन्द्रधर शर्मा ` गुलेरी ` की ` उसने कहा था ` ये कहानियाँ भी लोकप्रिय हुई। भावना प्रधान कहानियोंकी परंपरा में जयशंकर प्रसादजी की आकाशदीप, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल,

देवरथ ,छाया आदि श्रेष्ठ कहानियाँ ` इन्दु ` पत्रिका में प्रकाशित हुई । इसके बाद प्रेमचन्द जी की ईदगाह,ठाकुर का हुआँ,पूस की रात, शतरंज के खिलाडी, नमक का दारोगा, कफन, बडे घर की बेटी, पंचपरमेश्वर,सवा सेर गेहूँ आदि श्रेष्ठ तथा लोकप्रिय कहानियाँ समझी जाती हैं । इन्होंने आदर्श और यथार्थ का सुन्दर संयोग अपनी कहानियों में किया है । इसी कारण इनकी कहानियाँ ` आदर्शोन्मुख यथार्थवादी ` समझी जाती हैं । प्रेमचंद काल में कहानी के विकास में अनेक कहानीकारोंने योगदान दिया । उनमें से विशेष उल्लेखनीय है - विश्वंभरनाथ शर्मा ` कौशिक ` , चन्द्रधर शर्मा ` गुलेरी, सुदर्शन जी, बेचन शर्मा ` उग्र ` चतुरसेन शास्त्रीजी, जैनेन्द्रकुमारजी,इलाचंद जोशी,अज्ञेयजी,भगवतीचरण वर्मा जी, यशपालजी, अमृतलाल नागर,विष्णु प्रभाकर,चन्द्रगुप्त विद्यालंकार,रांगेय राघव आदि ।

सन १९४० से १९५० तक का काल भीषण राजनैतिक उथल-पुथल का था । उसका परिणाम स्वातंत्र्योत्तर कहानी पर भी पडा । इन कहानीकारों में, भीष्म साहनी, मोहन राकेश,अमरकांत,कमलेश्वर,धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, मन्नु भंडारी,निर्मल वर्मा,उषा प्रियंवदा आदि प्रमुख समझे जाते हैं । सातवें दशक के साथ नये पीढी के कहानीकारों में दूधनाथ सिंह,महेन्द्र मल्ला, गिरिराज किशोर, विजय मोहनसिंह,सुधा अरोडा,ममता कालिया,ज्ञानरंजन तथा रमेश बक्षी आदि उल्लेखनीय हैं । आज कहानी विधा साहित्य की अन्य विधाओं से होड लेती हुई अधिक लोकप्रिय बनती जा रही है । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

स्वातंत्र्यपूर्व काल से आज तक लिखनेवाले लेखकों में श्री विष्णु प्रभाकर जी एक श्रेष्ठ कहानीकार हैं । आपका जन्म २१ जून,१९१२ को हुआ है । इस समय वे ८२ वर्ष के हैं । उन्होंने १९२६ ई.से लिखना आरंभ किया है । उस समय वे ८वीं कक्षा में पढते थे । १९४५ ई.मे उनकी प्रथम पुस्तक ` आदि और अन्त ` कहानी-संग्रह के रूप में छपी । १९४७ इ.के बाद तो वे निरन्तर लिखते रहे और बाद में तो मसिजीवी हो गये । उनकी साधना का क्रम जारी है ।

विष्णु प्रभाकर जी ने साहित्य की सभी विधाओं पर लेखन किया है। उनका कथा-साहित्य विस्तृत है। इनके कथा-साहित्य के अन्तर्गत हमने यहाँ कुछ कहानी-संग्रहों पर विचार किया है। विष्णु जी में कहानीकार का जन्म सन १९३४ में 'स्नेह' नामक कहानी से हुआ था। तब से अब तक उन्होंने विविध प्रकार की कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियाँ पहले पत्र-पत्रिकाओं में छपती थीं। कुछ कालान्तर के बाद में कहानी-संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई। कहानी-संग्रह की तुलना में इनके उपन्यास कम हैं। उनके बीस के आस-पास कहानी-संग्रह हैं। उसके अन्तर्गत २५० से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं।

प्रस्तुत अध्याय में हमने केवल चार ही कहानी संग्रहों पर विचार किया है। वे इस प्रकार हैं--

१) 'धरती अब भी घूम रही है' सन १९५९।

२) 'साँचे और कला' सन १९६२।

३) 'पुल टूटने से पहले' सन १९७७। और

४) 'एक और कुन्ती' सन १९८५।

इन कहानी-संग्रहों के अन्तर्गत क्रमश: सोलह, आठ, चौदह और ग्यारह आदि कहानियाँ संकलित हैं। उन कहानीसंग्रहों का क्रमश: विवेचन इस प्रकार है --

'धरती अब भी घूम रही है --'

'धरती अब भी घूम रही है', यह विष्णु प्रभाकर जी का उल्लेखनीय कहानी-संग्रह है। प्रस्तुत कृति में उनकी स्वयं अपने द्वारा चुनी हुई कहानियाँ हैं, जो उनकी अपनी ही भूमिका के साथ संगृहीत हैं। इस संग्रह के अन्तर्गत आनेवाली कहानियाँ सोलह हैं।

इसमें सबसे अधिक लोकप्रिय और उल्लेखनीय कहानी 'धरती अब भी घूम रही है' यह है। यह कहानी अत्यन्त सशक्त और बहुचर्चित है। कहानी मानव के सामाजिक जीवन को लेकर एक बहुत बड़ा व्यंग्य है। इस कहानी में पारिवारिक, सामाजिक और शासकीय व्यवस्था की क्रूरता और नकली मानवता का पर्दाफाश किया गया है।

इस संग्रह के अन्तर्गत रिश्वत-खोरी, मनुष्य का पाखण्ड आदि का चित्रण हुआ है। `ठेका` यह कहानी मानवीय मनोविज्ञान को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। `अभाव,` नाग-फाँस`, `शरीर से परे, आदि कहानियों में नारी जीवन के रहस्यों को उजागर किया गया है। कुछ कहानियों में धार्मिक समस्याओं का भी चित्रण हुआ है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस संग्रह की कहानियाँ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा नारीत्व के रहस्यों को स्पष्ट करने वाली हैं।

`साँचे और कला`

`साँचे और कला` इस कहानी-संग्रह के अन्तर्गत कुल आठ कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ अलग-अलग रूप में छोटी-छोटी घटनाओं पर लिखी हुई हैं। सिर्फ `नई ज्यामिति` इस कहानी में नया प्रयोग हुआ है। `साँचे और कला` इस कहानी में प्रेम भाव को स्पष्ट किया है। जिसका प्रतिक राधा-कृष्ण की मूर्ति है। और इस मूर्ति के पीछे के भाव को सिर्फ स्वयं लेखक ही समझाते हैं। `कैक्टस के फूल` में प्रेम-विवाह के साथ ही एक साहित्य कार की प्रतिष्ठा का चित्रण है। इस कहानी की नायिका झूठी प्रतिष्ठा के पीछे दौडती है और उसमें उसका अन्त हो जाता है। `स्वर्ग और मर्त्य` इस कहानी में अपनी इच्छापूर्ति के लिए संघर्ष और महत्वाकांक्षा की जीत का चित्रण है। `छोटा चोर,बडा चोर` इस कहानी में रिश्वत की समस्या का चित्रण है। `एक पुरानी कहानी` में हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं का चित्रण है। `समझौता` में उँचे कुल और प्रतिष्ठा का चित्रण है। अत: इसमें बताया गया है कि जीवन के लिए समझौता अनिवार्य है।

`पुल टूटने से पहले`

`पुल टूटनेसे पहले` यह विष्णु जी का नया कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह के अन्तर्गत चौदह कहानियों का समावेश है।

विष्णुजी ने `सत्य` को इन रचनाओं में प्रतिबिम्बित करने की चेष्टा की है। उनकी समस्त कहानियों में आधुनिकता का बुध्दिवादी स्तर और मनोवैज्ञानिक पकड मुख्य रूप में निहित है। कुछ कहानियों में पारिवारिक चित्रण भी दिखाई देता है। इनकी कहानियों में अनुभव की सघनता और अभिव्यक्ति का खुलापन है।

` पूल टूटने से पहले` इस कहानी में राजनीतिक भ्रष्टाचार का वर्णन किया है। ` मटकन और मटकन` में एक विधवा स्त्री के संघर्ष का चित्रण किया है।` एक मौत समन्दर किनारे` इसमें एक धनी व्यक्ति का चित्रण है और एक आवारा और बदचलन लड़की का भी चित्रण है।` एक रात: एक शव` में विवाह बाह्य प्रेम का चित्रण है।` बेमाता` में नयी और पुरानी पीढी का संघर्ष चित्रित किया है।` राजम्मा ` में पति होते हुए भी पति के मित्र से प्रेम करनेवाली एक स्त्री का चित्रण है। ` फासिल इन्यान और ..` इस कहानी में एक कलाकार के जीवन को चित्रित किया है।` ढोलक पर थाप ` में एक आधुनिक विदेशियों का अन्धानुकरण करनेवाली स्त्री का चित्रण किया है। ` बस इतना भर ही` इस कहानी में सौन्दर्य के पीछे भागने वाले व्यक्ति का चित्रण है।` एक अनचीन्हा इरादा` में निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में पैदा होनेवाले बच्चों की माँ-बाप के कारण जो दुर्दशा होती है उसे स्पष्ट किया है।` भोगा हुआ यथार्थ ` में एक स्वार्थी-व्यक्ति को चित्रित किया है।` राग और अनुराग ` में पिता-पुत्र का प्रेम चित्रित है।` सलीब ` में रिश्वत न लेने वाले को रिश्वत देकर भ्रष्टाचारी बनाया है।` अँधेरे आँगन वाला मकान` में वृध्द पति-पत्नी का चित्रण है।

` एक और कुन्ती `

` एक और कुन्ती` इस कहानी-संग्रह में ग्यारह कहानियाँ है। इस कहानियों में आर्थिक,सामाजिक,पारिवारिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण हुआ है।

` सत्य को जीने की राह` इस कहानी में नारी सौन्दर्य की लालसा और धन की लालसा को स्पष्ट किया है।` एक और कुन्ती` में नारी सौन्दर्य को पाने के लिए संघर्ष स्पष्ट किया है।` तूफान में अन्धविश्वासों का स्पष्ट चित्रण हुआ है। ` चन्द्रलोक की यात्रा` में एक मध्यवर्गीय परिवार के आर्थिक परिस्थिति का चित्रण किया है।` तिरछी पगडंडियाँ ` में एक अनाथ और सुन्दर लड़की का चित्रण है।

` चैना की पत्नी` इस कहानी में वासना का चित्रण है।` मंजिल` इस कहानी में सामाजिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार का वर्णन करते हुए पद और प्रतिष्ठा के बिना भी देश-सेवा की जाती है यह स्पष्ट किया है।` चिरन्तन सत्य` में

राजनीतिका चित्रण है कि पुलिस और नेता लोग एक दूसरे के विरोधी होते है। ऐसे प्रसंग का वर्णन किया है` राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा` में बताया है कि राजगद्दी के लिए अपना बेटा अगर न हो तो किसी दूसरे के बेटे को खरीदा तक जाता है। ` भूख और कुलीनता` में स्वाभिमान की भावना है।

कुछ कहानियों में राजनीति को स्पष्ट करते हुए पुलिस-जनता पर किस तरह अन्याय करती है इसको भी स्पष्ट करने की चेष्टा विष्णुजी ने इस संग्रह के अन्तर्गत की है।

कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर जी को हिन्दी-साहित्य के इतिहास में एक सफल एकांकी-नाटककार के रूप में पहचाना जाता है और उसी का प्रभाव उनकी इन कहानियों पर पडा है। कहानियों में कहीं कहीं पर विचित्र कृत्रिमता आ गई है। उनकी समस्त कहानियों में आधुनिकता का बुध्दिवादी स्तर और मनोवैज्ञानिक पकड मुख्य रूप में निहित है। कुछ कहानियों में पारिवारिक चित्र भी उभरे है। इनकी कहानियों में अनुभव की सघनता और अभिव्यक्ति का खुलापन है। कुल मिलाकर कहानियों में आधुनिकता बोध का आग्रह अधिक है।

विष्णु प्रभाकर जी के उक्त चार कहानी संग्रहों की सभी कहानियों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है। वह इस प्रकार है --

१) धरती अब भी घूम रही है --

नीना और कमल इन दो बच्चों के पिताजी रिश्वत लेते हैं, क्योंकि उन्हें आमदनी कम है। बच्चों को वे अच्छी शिक्षा दिलाना चाहता था। इसीलिए वह रिश्वत लेता है और उसी कारण उन्हें जेल में जाना पडता है। तब उनके बच्चों की देखभाल मौसा और मौसी पर आती है। वे उनकी ठीक नहीं सम्भाल पाते। उनका मौसा पाँच सौ रुपयें रिश्वत लेता है परंतु वह समाज में सम्मान से जीता है लेकिन बीस रुपये रिश्वत लेनेवाला जेल में जाता है।

जज और हाकिम रुपयों और खूबसूरत लडकियोंको लेकर डाकू को छोड देते हैं। यहा न्याय देनेवाले ही अन्याय करते हैं। एक प्रोफेसर एक लडकी को एम.ए. में अव्वाल बढाता है, क्योंकि वह खूबसूरत थी ....। इन सभी जानकारी के कारण

वे बच्चें जज से कहते हैं, कमल ने कहा ` हमारे पास पचास रुपये हैं । आपने तीन हजार लेकर एक डाकू को छोडा । नीना बोली ` लेकिन हमारे पिताजी डाकू नहीं हैं । महँगाई बढ गई थी । उन्होंने बीस रुपयों की रिश्वत ली थी ।` कमल ने कहा, रुपये थोडे हो तो ...` नीना बोली` तो मैं एक-दो दिन आपके पास रह सकती हूँ ।` कमलने कहा`, मेरी जीजी खूब सूरत है और आप खूबसूरत लडकियों को लेकर काम कर देते है....`[१] इन बातोंसे धरती घूम रही है ऐसा लेखक को लगता है ।

इस कहानी में समाज में जो भ्रष्टाचार फैला है,उसका चित्रण है । साथ ही सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का चित्रण भी हुआ है । रिश्वत का प्रतिक खूबसूरत लडकियाँ और रुपयें माना है । इसमें बाल सुलभ भाव स्पष्ट चित्रित हैं । इन दो बच्चों की वाणी से लेखक को धरती ही मानों घूम रही है ऐसा लगता है । समाज में आज भी कितने लोग ऐसे हैं जो रिश्वत लेते हैं और देते हैं । जो कम रिश्वत लेता है वही जेल जाता है और जो जादा लेता है वही समाज में सम्मान के साथ जीता है यह आज की सामाजिक व्यवस्था है ।

२) अगम - अथाह --

एक वृध्द आदमी का सोलह वर्ष का बेटा किशोर स्कूल से चला गयाथा । उसकी तलाश में वह वृध्द पिताजी न जाने कहाँ कहाँ चले परंतु वह कही भी नहीं मिल पाता । वह बुढा इस दु:ख से अपने आपको सम्भाल पाता है परंतु अपनी पत्नी को नहीं । गाडी में एक युवक रमेश से उसकी भेंट होती है और उसे वह अपनी दु:खभरी कहानी सुनाता है । रमेश को एक दिन यह समाचार मिलाकि उस वृध्द का बेटा मुलतान कैम्प में है उसे उन्होंने ढूँढा पर वह नहीं मिला ।सिर्फ उसके मृत्यु की खबर ही मिली पर इस खबर को उस वृध्द माँ-बाप को कहने की हिम्मत वह अपने आप में लाने का प्रयत्न करता रहा ।

इस कहानी में एक माँ-बाप की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है । साथ ही कुछ नवयुवक दुसरों को अपना मानकर उनके लिए कुछ न कुछ करने की चेष्टा करते हैं । हर एक माँ-बाप की जायदाद अपनी सन्तान ही होती है । और सन्तान के बिना जीना ही उनको असहाय्य हो जाता है । इस कहानी में

पारिवारिक समस्या का चित्रण हुआ है। मानव का जीवन क्षणिक है यह जानकर भी वह अपने प्रयत्न से छुटकारा नहीं ले पाता।

३) रहमान का बेटा --

रहमान का बेटा सलीम जो अपने परिवार की गन्दी स्थिति को बदलना चाहता है। इसी कारण वह घर से चला जाता है। परंतु रहमान की चाह है कि वह पढलिखकर मुन्शी बने या जात-बिरादरी में नाम कमाये। ऐसा न होने के कारण रहमान दु:खी होता है। फिर भी उनके मनमें बेटे के प्रति प्यार है। समाज की वर्ग हीनता और बडे लोगोंके बारेमें कहा है कि औरतें ऐसी गिर गई हैं कि पराए मरद कमर में हाथ डालकर फिरते हैं। एक दिन ड्रामा में पुलिस के कप्तान लालाजी बने थे। वे लालाजी बनकर लोगों को हँसाते रहे और मेजर साहब उनकी बीवी को लेकर डाक बंगले की सैर करने चलेगए। तनखा बॉटते वक्त अँगूठा पहले लगवा लेते हैं और पैसे के वक्त गरीब को डाँटते हैं। इन बातों पर सलीम सोचकर अपने विचार लोगों के सामने रखता है। इस बात को बच्चे सुनते हैं और अपने अपने घर में बता देते हैं, "भइयाने मुझसे कहा था, मैं अब घर नहीं आऊँगा।"[२] क्योंकि हम गन्दे हैं? अब इस घर में नहीं रहूँगा, नया घर लूँगा, बहुत साफ और वह चला जाता है फिर नहीं आता।

इस कहानी में निम्नवर्ग के परिवार की समस्या को स्पष्ट किया है। साथ ही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को भी चित्रित किया है। सलीम इस कहानी का प्रमुख पात्र है। वह गन्दे समाज से बाहर निकलना चाहता है। इसलिए अपने माँ-बाप और घर को भी त्याग देता है। सलीम अपने जीवन को बदलना चाहता है। उन्होंने देखा है कि जो उच्च वर्ग के लोग हैं वे गरीबों के साथ किस तरह आचरण करते हैं। जो खुद को उच्च समझाते हैं वे कितने गिरे हुए होते हैं इसका भी उदाहरण मिलता है। नेता लोग लोगों को फँसानेका ही काम करते हैं। यह जब तक चलता रहेगा तब तक समाज की उन्नति नहीं होगी।

४) गृहस्थी --

वीणा हेमेन्द्र की पत्नी है। उन्हें एक बेटा अतुल है और माँजी सुजाता

ऊर्फ ताता । हेमेन्द्र कुछ भी कमाते नहीं परंतु मित्रों को घर पर लाकर भोजन देते हैं ।और भोजन का प्रबन्ध वीणा को ही करना पडता है । एक दिन एक मित्र आते हैं तब घर में आटा नहीं है इसीलिए वीणा पडोसी शीला मामी के पास सुजाता को भेजती है पर न देने के कारण स्वयं जाती है तभी मामी कहती है,हेमेन्द्र का यह निकम्मापन अच्छा नहीं । उसे कुछ न कुछ काम करना चाहिए । इस बातसे वीणा क्रोधित होती है और उसे कहती है ,` बस बस,शीला मामी । रहने दे ` उन तकन जा । उन्हें तू खिला रही है क्या ? तेरा इतना साहस कि तू उन्हें निकम्मा कहें ?" [३]

कुछ दिनों के बाद पाँच मित्र आते हैं । उस समय भी वही अवस्था हो जाती है । वह क्रोधित होती है इतनेमें मदन आता है । वह वीणा से कहता है, ` मामी । इसका तो कुछ न कुछ प्रबन्ध करना ही होगा । मैं कहता हूँ,आज तुम खाना मत बनाओं । देखते हैं क्या होता है । आखिर एक दिन इसका फैसला तो होना ही है ।` होना तो है ।` तो बस, आज होने दो । सबसे अच्छा तो है कि तुम गायब हो जाओ ।"[४] यह सुनकर वीणा अन्दर चली जाती है और सन्दूक से कुछ रुपये मदन के पास देकर उससे बजार से सामान लाती है और खाना उन सभी को खिलाती है परंतु स्वयं के कुछ भी नहीं बचा कर रखती । हेमेन्द्रने पूछने पर वह कहती है, कान खोलकर सुन लो,मैं जा रहीं हूँ । वीणा जाने की तैयारी करती है,इतनेमें एक औरत हेमेन्द्र के पास आकर कहती है," मैंने तो निश्चय कर लिया है, मैं अब उसके साथ नहीं रहूँगी । मैं कल ही आप के पास आ जाऊँगी ।" [५] वह कहता है,तो वीणा से कहूँगा कि वह तुम्हारा प्रबन्ध कर दे । वीणा के बिना मैं कुछ नहीं हूँ ।` वीणा यह सुनकर गिर पडी और रो उठी " ओह! मैं इतनी कायर क्यों हुई ? क्यों .... क्यों..." [६]

इस कहानी में एक निकम्मे व्यक्तिका वर्णन किया है । इसमें आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का उल्लेख मिलता है । इस कहानी की नायिका वीणा अपने पति कुछ भी कमाते नहीं है फिर भी वह उनका आदर करती है । लेकिन उससे जब नहीं सहजाता तब वह क्रोधित होकर घर छोड़कर जाने का इरादा करती है तभी एक औरतके साथ हेमेन्द्र की जो बात होती है वह सुनकर उसमें फिर अपने पति के

बारे में प्यार निर्माण होता है। वह एक पतिव्रता नारी है और सामाजिक रुढियों का पालन करनेवाली गृह स्वामिनी है। जो आदर्श पत्नी के रूप में दिखाई देती है। इसीसे कहानी के शीर्षक की सार्थकता हो जाती है।

५) नाग-फाँस --

लालाचन्द्र सेन निम्न वर्ग के व्यक्ति थे। उनकी पत्नीने चौदह पुत्रों को जन्म दिया था पर आज उनके पास दो ही है। और चार सगाई के पहलेही घर छोडकर भाग गए थे। उनके पास कुशल और छोटा सुशील दो ही हैं। लोगोंने कहने के कारण सुशील की माँ ने कुशल की शादी तय की। हल्दी के समय देखा तो कुशल वहाँ नहीं है वह तो पिछली रात ही कही चला गया है और उसका एक पत्र मिला परंतु उसे पढनेसे पहले ही माँ समझ गई। लोगोंने कहा ढूँढो। लालाजी बोले, व्यर्थ है। क्या ? जो रहना नहीं चाहता उसे रोकने की चेष्टा करना उसे और खोना है।' मैंने गलती की जो उसे बाँधना चाहा उससे कहता बेटा। तू भी जा दुनिया को देख,पहचान। मेरा जो कर्तव्य था वह मैंने यथाशक्ति पूरा कर दिया। पालपोस तुझे सोचने ,समझने योग्य बना दिया।" ७

सुशील को उस दिन से ज्वर चढा जो दिनो-दिन बढता ही रहा। और उसे टाइफाइड के साथ मलेरिया हो जाता है। बेटा पितासे कहता है मैं कालेज जाऊँगा डाक्टर बनूँगा। सुशील का बुखार न उतरने के कारण डाक्टर कहते हैं मैं चार दिन यहाँ रहकर रोगी का अध्ययन करना चाहता हूँ। यह बात सुशील की माँ को मालूम नहीं थी। रात के दो बजे डाक्टरने लालाजी को दिखाया एक मूर्तिने सुशील को चूमा और उसके बदनसे चादर उतार दी। दवा की शीशी उठाकर फेंक दी। तभी लालाजी ने कहाँ यह तो सुशील की माँ है। तब वे दोनों अन्दर चले तब वह छायामूर्ति बेहोश होकर बोली, सुशील अच्छा हो रहा है वह कालेज जाएगा - डाक्टर बनेगा और फिर नहीं लौटेगा। उसके भाई भी नहीं लौटे थे। नहीं,नहीं, वह शहर नहीं जा सकता वह मुझे नहीं छोड सकता।"८ डाक्टर ने कहा,' मुझे यही डर था।' माँ का स्नेह पुत्र का काल बना हुआ है डाक्टर। डाक्टर ने कहा, " स्नेह नहीं,यह मनुष्य का स्वार्थ है,जो प्रतिक्षण मनुष्य की हत्या करता रहता है।" ९

इस कहानी में एक स्वार्थी माता का चित्रण है । जो अपने स्वार्थ के लिए अपने बेटे की बली देना चाहती है । इसमें मनोवैज्ञानिकता और सामाजिक समस्या है । माँ का स्नेह पुत्र का काल किस तरह बनता है इसका उदाहरण देनेवाली यह कहानी है । हर माँ अपने बेटेसे प्यार करती है परंतु वह प्यार ऐसा नहीं कि उसमें बेटे को खोना पडे । डाक्टर यह एक माँ के स्नेह को खोलने वाला व्यक्ति है जो माँ के दोष को दिखाता है । माँ के प्यार के कारण हीउनके चार बेटे घर छोड कर चले गए हैं और उनके राह पर कुशल भी चला जाता है । इसीकारण उस माँ को लगता है कि शायद यह छोटा न जाये इसीलिए वह उनको दवाई नहीं देती । उनके मनमें यह भय है कि वह अगर ठीक होगा तो वह भी अपने भाई की तरह चला जाएगा ।

६) सम्बल --

सरदार इन्द्रसिंह एक कर्नल है । उनमें बहुत से अच्छे गुण हैं परंतु उनमें एक बडा दुर्गुण भी है,कि वे शराब पीते हैं । कारण उसकी पत्नी बहुत शान्त और भली स्त्री है । पति नशे में जिनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं ,उनसे वह स्वयं क्षमा माँगती है । सिंहजी कहते हैं कि शराब छोड दी तो पत्नी मुझसे प्रेम करना छोड देगी । सिंह के दो मित्र है कान्त और तिवारी कान्त को तिवारी का पत्र आता है कि गत सप्ताह में सिंह की पत्नी का देहान्त हो गया । उन्हें पढकर बहुत दु:ख होता है। तिवारी,सिंह और उनकी पत्नी जीप में जा रहे थे और सडक पर उंटों को देखकर तिवारी की जीप पेड पर टकराई और उसमें सिंह की पत्नी का अन्त हो गया । सिंह ने तिवारी से कहा था' तिवारी इस देश को आदमियों की नहीं, प्रेम की जरुरत है । मैं भाग्यशाली हूँ मुझे प्रेम मिला है । उसे छोडकर मैं गुलामों की संख्या बढाऊँ । ऊँहूँ । यह कभी नहीं होगा ?"

सिंह पत्नी की मृत्यु के बाद शराब छोड देते हैं । विश्व के दूसरे विश्व-युध्द में सिंहने महान कार्य किया पर वे उसमें नहीं बच सके । यह खबर उनके मित्र को अखबार से मिलती है । उसमें लिखा था उनके बक्स में एक अदभुत वस्तु मिली है, वह है उनकी स्वर्गीय पत्नी के एक चित्र के साथ रेशम में लिपटी हुई शराब की एक बोतल जिस पर लिखा था, आज १५ मई १९३९ है । एक दिन मुझे जब संभालने-वाला मिल जाएगा और वह बहुत शीघ्र मिलेगा,तब मैं इसे पिऊँगा । उस दिन से

उन्हे सँभालने वाला कोई नहीं मिला था ।

इस कहानी मैं एक वीर पुरुष को चित्रित किया है । इसमें एक आदर्श पत्नी का चित्रण किया है जो अपने पति के लिए अपनी परवा नहीं करती । पति शराबी होने पर भी पत्नी उनसे बेहद प्यार करती है । इसमें देश प्रेम और पति पत्नी का प्रेम चित्रित है । सिंह जैसे एक कप्तान देश के लिए अपने जान की कुर्बानी देनेवाले महान व्यक्ति हैं । जो अपने कर्तव्य से हट नहीं सकते । अपना सर्वस्व देश के लिए अर्पित कर देने वाले एक वीर पुरुष का चित्रण लेखकने इस कहानी के द्वारा किया है ।

७) ठेका --

एक ठेकेदार राजकिशोर और उनकी पत्नी श्यामा अपने पार्टी का निमंत्रण रोशनलाल और उसकी पत्नी संतोष को देते हैं । तभी रोशनलाल पार्टी में जाते हैं परंतु सन्तोष सहेली से मिलकर पार्टी में आने का वादा कर के जाती है । वहाँ पार्टी में वह न आने के कारण रोशन को अपने मित्रों से बहुत बुरी बातों को सुनना पडता है । तभी वह राजकिशोर और श्यामा से विदा लेने गया तब श्यामा हंस पडी और बोली " शायद आप को मालूम नहीं । मैंने आज सन्तोष को मिस्टर वर्मा साहब के साथ देखा था ।` मिस्टर वर्मा के साथ जी हाँ ।"[१०] यह सुनकर रोशन वर्मा के घर गए पर वह वहाँ न मिलने के कारण वह शानदार रेस्तारॉ में गये और देखा तो दोनों एक साथ बैठ कर मुस्करा रहे हैं । वह पीछे हट कर अपने घर पर आ गया और उसने निश्चय किया कि सन्तोष को जान से मार डाले ।

कुछ क्षण बाद सन्तोष घर आती है तब वह क्रोधित होता है पर वह कहती है मैं श्यामा को नीचा दिखाना चाहती थी इसीलिए मैं वक्तपर पार्टी में न आ सकी । अगर मैं वर्मा के साथ न रहती तो वह ठेका राजकिशोर को मिल जाता । यह सुन कर रोशन उन्हें बाहोंमें भर लेता है और कहता है बोल मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ ? वह बोली` कुछ नहीं डार्लिंग,मैं पिक्चर जा रही हूँ । मेरा इन्तजार न करना । सो जाना ।"[११]

इस कहानी में समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार और शिष्टाचार का चित्रण है। इसमें एक ठेकेदार का वर्णन है। और गिरते हुए नैतिक मूल्यों का अनूठा चित्रण भी है। सामाजिक समस्या और आर्थिक विषमताओं को स्पष्ट किया है। लोग अपनी प्रतिष्ठा को जताने के लिए कितना भी नीच कार्य क्यों न हो वही कर देते हैं। अपनी इज्जत तक बेच देते हैं। मानव धन के लिए अपनी मानमर्यादाओं को मिट्टी में मिला देता है। आज भी समाज में कितने ऐसे लोग हैं कि जो इस तरीकेसे ठेके को प्राप्त करते हैं। इस कहानी का यह शीर्षक सार्थक है। इस कहानी की नायिका ठेके का ही प्रतिक है ऐसा जान पडता है। हर एक आदमी झूठी प्रशंसा को जताने का प्रयास करता है।

८) जज का फैसला --

यह कहानी रेल के डिब्बे में एक जज ने कही है। बिल्टा स्टेशन गुजर जानेपर हर एक यात्री वार्तालाप करने लगे। एकने कहा यहाँ भयंकर दुर्घटना हो गई थी। एक युवक इंजिनियर ने अपनी घटी घटनाएँ सुनाई। तभी एक प्रौढ सज्जन जो सेवानिवृत्त जज थे उन्होंने एक दुर्घटना सुनाई कि एक रात्रि में दो पति पत्नी यात्रा कर रहे थे। उनको नींद आती है तभी अचानक गाडी लडखडाती है। तभी सभी यात्री नींद में ही गिर पडे। परंतु वे दोनों दम्पति बच गए पर उनके शरीर पर अनेक घाव आए और उनमें पत्नी का एक पैर, आँख और हाथ निकम्मा हो गया। उन दोनों को अलग अलग अस्पताल में दाखिल किया गया था। दूसरे दिन पति ने पत्नी को देखने की चाह प्रकट की तभी डाक्टरने उसको उस अस्पताल में भेज दिया। परंतु शर्त यह थी कि वह पत्नी को देख सकेगा, बोलेगा नहीं। पर वह न मानने के कारण डाक्टरने सोचा इसे मुक्त करना ही ठीक है। उसने जानेसे पहले पत्नी को देखने की इच्छा प्रकट की।

वह पत्नी के पास गया उसका हाथ उठाया और गिरा दिया। तीसरी बार उसने दोनों हाथ उठाए और घायल पत्नी के गले पर जमाए-क्षण भर में उस कमरे की दुनिया पलट गई और उसकी मृत्यु हो गई। और उन्होंने अस्पताल के अधिकारियों और कर्मचारियों से कहा "मैं अब कहीं भी चलने को तैयार हूँ ..."[१२] जज महोदय रुक गए। कुछ यात्रियोंने कहा आपने उसे मुक्त किया होगा। मित्रो

मैं उसके साथ अन्याय नहीं कर सका । मैंने उसे फाँसी की सजा दी थी ? हम सब चीख उठे । रेलसे उतरते हुए जज ने कहा," उसे जीवित रखना उसकी पवित्र भावना का अपमान होता" । और वे फिर मुसाफिरों की भीड में खो गए ।

यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है । इसमें मानव मन की विचित्रता और जटिलताओं का चित्रण है । इस कहानी में जज ने एक अन्याय करनेवाले को योग्य न्याय दिया है । खूनी को सजा मिलनी ही चाहिए नहीं तो सभी और अन्याय ही अन्याय बढ सकेगा । पति-पत्नी का प्रेम यहाँ क्षणिक दिखाई देता है । उस पत्नी का सौन्दर्य नष्ट हो जाने से उसके प्रति जो प्रेम पति के मन में था वही भी नष्ट हो जाता है । उन्होंने अपनी पत्नी के साथही अपने प्रेम को भी मिटाया है । न्याय के बारे में जज ने योग्य फैसला करके अपना फर्ज निभाया है और समाज की जो झूठी परंपरा है उनको नष्ट कर दिया है ।

९) <u>कितना झूठ</u> --

निशिकांत और उसकी पत्नी सत्यभामा इन दोनों में बेहद प्यार है । वह अपनी पत्नी को प्रसूति के लिए अस्पताल भेजता है । वहाँ उन्हे हर दिन किसी को लडका हुआ है तो, किसी को लडकी यही सुनाई पडता है । जिनको लडका हुआ है वे आनंदी और जिनको लडकी हुई है वे दु:खी है । निशिकांत को बच्चा हुआ है पर उसके पत्नी की अवस्थाएँ बुरी हैं । इसी कारण उन्हे वहाँ रहना पडता है । साथ मामी है । पत्नी ने होश में आकर पूछा बच्चा कहा है तब वे कहते हैं कि बच्चा घर में है । उन्हें यकीन नहीं आता । वह उठकर भागती है । इतने में निशिकांत का छोटा भाई आता है और कहता है," जल्दी घर चलो माँ । माँ ने कहा क्यों रे ? वह बोल नहीं सका । रो पडा" निशिकांत समझाकर हँस पडा" अरे रोता है, इतना बडा होकर । दुनिया में मरना-जीना तो लगा ही रहता है,.. ।" [१३]

निशिकांत के सामने अब पत्नी को बचाना यही एक मात्र उद्देश्य रहा है । वह अपने आप से कहता है " सत्यभामा को बचाने के लिए मेरे अन्दर इतनी तीव्र लालसा क्यों... क्यों मैं उसे मरने नहीं देना चाहता... क्यों मैं ?"[१४]

इस कहानी में पति-पत्नी का प्रेम और बेटे की लालसा का स्पष्ट चित्रण है। पुत्र प्राप्ति के लिए किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस को स्पष्ट किया है। हर माँ की पूँजी सन्तान है और उसे पाने के लिए वह खुद को भी मिटा देना चाहती है। इसमें सामाजिक समस्याका चित्रण है। हर आदमी अपने कुल का दीपक पुत्र ही मानता है और उसे पाने के लिए वह अपना सब कुछ त्याग देता है। परंपरा के अनुसार इस कहानी के पति और पत्नी का चित्र अंकित हुआ है। पति बेटे की मरने की खबर सुनकर भी अपने आप को तो सम्भालता है। परंतु अपनी पत्नी का बचाने का भी प्रयास करता है। पति के मन में पुत्र प्रेम से भी कही अधिक पत्नी के बारेमें प्रेम है।

१०) <u>अधूरी कहानी</u> --

इस कहानी का एक पात्र स्वयं लेखक भी है। इस कहानी की शुरुआत रेल के डिब्बे में होती है। डिब्बे में हिन्दू मुस्लिम दोनों भी हैं। हिन्दू-मुस्लिम युवकों में अपने अपने धर्म पर वाद-विवाद हो जाने के बाद मुस्लिम युवक एक कहानी सुनाता है। जो उसे उसके वल्दाने सुनाई थी। बात आजसे तीस बरस पहले की है। हमारे कस्बे में हिन्दू-मुसलमान मिलकर रहते थे। ईद के समय हिन्दू अपनी गाय भैंसों का दूध मुसलमानों को बाँट देते थे। उस साल ईद के समय अहमद अपनी अम्मा फातिमा जो बीमार थी उसके पास बैठा था ` फातिमा ने उसे कहा` जा अहमद। तू जल्दी जाकर दूध ले आ` मैं तब तक तेरे कपड़े निकालती हूँ। आज ईद जरूर मनेगी। अहमद दूध लेने के लिए जाता है परंतु उन्हें कही भी दूध नहीं मिलता तब एकाएक उसके मित्र दिलीप ने उन्हें बुलाकर दूध दिया। तभी दिलीप की माँ ने कहा, तेरी माँ बीमार है ? ` जी` तो सेवैया कौन बनाएगा ?` वही बनाएगी। ` अच्छा, हमें भी खिलाएगा ना` ?[१५] जरूर। कहकर वह घर आता है। उसे माँ ने कटोरे में सेवैयाँ भर कर खाला और मामू के घर देने को कहा परंतु वह उसको न देकर दिलीप के घर जाता है। वहाँ दिलीप का बड़ा भाई माँ और चाची है। चाची कहती है, ` हम क्या तुम्हारी सेवैयाँ खा सकते हैं ? हमें क्या अपना ईमान बिगाड़ना है। माँ ने कहाँ` बेटे। मैंने तुमसे मजाक किया था। हम तुम्हारे घर की सेवैयाँ नहीं खा सकते।`

इस बात से अहमद के दिल पर चोट लगी । उसका दिमाग चकराने लगा । और सेवैयाँ का कटोरा गिर पडा जिस पर दिलीप और उसकी माँ ने सवेरे दूध के रुप में अपनी मुहब्बत अहमद के दिल में उँडेल दी थी । यहाँ कहानी रोक दी । एक ने कहा,` आपही अहमद है । अहमद मुस्कराए और कहॅा,` आपने ठीक पहचाना,मैं ही वह लडका हूँ ।`[१६] कहानी शायद आगे होगी । पर मेरे लिए वह अधूरी कहानी ही दिल का दर्द बना बैठी है ।

इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं को चित्रित किया है । हिन्दू-मुस्लिम के धर्म के मूल तत्वों को सँभालते हैं और अपने आपको मुस्लिम हिन्दुओं से ऊँचा समझाते हैं । दोनों । धर्म में एकता नहीं हो सकती यह वास्तविकता स्पष्ट रुपसे इस कहानी में दिखाई देती है । बाह्य रूपसे मुस्लिम हिन्दुओं से प्यार करते है लेकिन अन्दर उनके मन में वही प्यार नहीं है । वे दोनों मित्र होकर भी अपने अपने धर्म के बन्धन से छूटना नहीं चाहते । हर एक व्यक्ति अपने धर्म से बेहद प्यार करता है ।

११) आश्रिता --

सिरो ही गाँव में स्कूल मास्टर अजीतकुमार है । वे अकेले हैं । उसी गाँव के मनोहर ठाकुर की विधवा कन्या सोना जो बाप के घर रहती थी । उसे एक छोटा भाई किसुन ही सिर्फ है । किसुन के कारण अजीत और सोना का परिचय होता है और वह बढता भी है । परिणामत: गाँव वाले उनकी ओर पापकी दृष्टि से देखने लगे । एक दिन सन्ध्या अजीत किसी विचारों में खो गया था ।इतने में सोना आती है । उनमें बातचीत होने के बाद अजीत उसे कहता है,` क्या हम लोग विवाह कर ले ? वह बोली,` जानती हूँ नारी के लिए वे इससे अधिक नहीं सोच सकते,परंतु मास्टर साहब । क्या किसी विधवा के प्रति जरा भी सहानुभूति दिखाना उससे विवाह करने के लिए होता है ? क्या प्रेम का अन्त प्रेयसी की वासना में ही है ? `[१७] अजीत को दु:ख होता है । पर सोना उन्हें अपनी करुण कहानी सुनाती है, मेरा तो सर्वस्व कुँआरी अवस्था में ही लूट चुका था । विधवा होने के बाद एक वकील का लडका मुझसे विवाह करना चाहता था । इसीलिए मैं भाग कर यहाँ आई फिर वहाँ नहीं गई ।

अगले दिन किसुन स्कूल में न आने के कारण वे बेचैन थे। इतने में चौधरी आकर कहते हैं कि सोना फिर ससुराल चली गई ? अजीत की चेतना ही जैसे नष्ट हो गई। तीसरे दिन किसुन आता है और कहता है जीजी नहीं आएगी। तीन महीने बाद अजीत ने सुना, सोनाने एक वकील के लड़के के साथ पुनर्विवाह कर लिया है तब अजीत को लगा कि जैसे जीवन में अपना कुछ भी नहीं रहा है। उनको एक बच्ची हो गई है। चौधरी अजीत और किसुन बनारस जाने की तैयारी करते हैं तब पत्र मिला .. परसों सोना के पति का स्वर्गवास हो गया। पत्र अजीत ने फाड डाला इतने में सोना अपने बालिका के साथ आई और बोली" आज फिर मैं आश्रय मांगती हूँ, क्या दोगे ? "१८ पर सोना उस दिन तुम चली क्यों गई थी ? वह बोली कि जिस के आश्रय के आवरण के नीचे आकर मैंने अनाथ की भाँति लाडदुलार पाया, जिसकी ओर देखकर मैंने अपने हृदय को ममता से उमडते देखा उसी के सामने अपना आवरण कैसे हटाती ? और वह रोने लगी। तब अजीत उसे अकेली छोडकर बनारस नहीं जाता।

इस कहानी में एक विधवा बालिका की करुण पीडा का चित्रण है। विधवा को समाज ठीक तरीके से जीने नहीं देता। विधवाओं की ओर देखनेका दृष्टिकोन ही कुछ अलग है। उसके बारे में लोगों के मन में एक तरहकी घृणा ही निर्माण होती है। चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न हों। वह सामाजिक बंधनों को तोड नहीं सकती। याने उसकी अवस्था ही बिकट होती है। वह जी भी या मर भी नहीं सकती।

१२) मेरा बेटा --

हिन्दू-मुस्लिम आपस में लड रहे हैं जिसमें कुछ लोग जख्मी और मृत्यु मुखी भी पडे हैं। डा.हसन अस्पताल से घर लौटते हैं। इतने में डा.शर्मा ने उन्हें बुलाया है ऐसा नौकर ने कहा। तब हसन के अब्बा ने गुस्से से कहा, अभी आए हो खाना न पीना। मरने दो उसको।` परंतु डा.हसन जाते हैं और पूछते हैं, वह कौन है ? एक बूढा हिन्दू है। परदेशी कानपुर का रहनेवाला और उसका नाम रामप्रसाद है। आपरेशन के बाद दोनों डा.शर्मा के घर जाते है ? शर्मा के अब्बा उस जख्मी के बारेमें पूछने के बाद कहते हैं, वह मरा नहीं है ? डॉ.शर्मा ने कहा, डा.हसन ने

उसे बचा लिया । डा.हसन ने कहा क्या आप उन्हें जानते हैं ? तब अब्बाने उसका वर्णन बताया और कहा कि उसकी शक्ल कुछ कुछ मुझसे मिलती है ? मैं उसको जानता हूँ और नफरत करता हूँ।` इतने में डा.हसन के बूढे दादा अन्दर आए। उन्हें देखकर हसन के अब्बा घबराकर उठे। अनवर ने अब्बा को पलंग पर लिटा दिया।

दादा के पूछने पर हसन ने कहा,कानपुरवाले रामप्रसाद अस्पताल में पडे हैं, जख्मी हो गए थे, लेकिन अब ठीक है। मुसलमानों ने उसे मारा है। वे बोले,अनवर। ` तू मुझे उसके पास ले चल, मैं एक बार उसे देखूँगा ,वह मेरा बेटा है ` दादा रोने लगे।` बोले` उसमें कोई गैर नहीं,मैं मुसलमान हूँ और वह हिन्दू `[१९] वह मुझसे, मेरे बच्चों से नफरत करता है, पर वह भी मेरा बच्चा है। मैं उससे नफरत नहीं करता हसन` मैं उसे पूछूँगा कि हमारा बाप बेटे का नाता तो नहीं टूट सकता आखिर उसके बदन में मेरा खून है,कही अनवर से भी ज्यादा। अन्दर बेगम आँखों में आँसू भरे दु:खी दिल से चाय लिए बैठी थी जो चाय ठंडी होकर काली पड गई थी।

यह कहानी भी हिन्दु-मुस्लिम समस्याओं पर आधारित है। पिता-पुत्र के बीच धर्म की दीवार खडी है यह स्पष्ट करनेवाली कहानी है। इसमें धार्मिक समस्या हैं। एक डाक्टर अपना फर्ज निभाने का कार्य करता है। पिता अपने पुत्र के बारेमें धर्म की दीवार को नहीं मानता परंतु पुत्र को यह पसन्द नहीं है।

१३) <u>अभाव</u> --

प्रोफेसर वर्मा को एक बेटी है। वे दुसरों के सुखदु:ख को जानते हैं। उनके पडोस में एक नया दाम्पत्य आ बसा है जो सुन्दर और सुसंस्कृत है। सभी लोग उनकी ओर एक आदर्श पति-पत्नी के रुप में देखते हैं। परंतु उनकी गोद सूनी है। प्रो.वर्मा की पत्नी भी उनकी प्रशंसा करती है। एक दिन माँ की तरह बेबी मुंडेर पर चढकर उनके घर पर झाँकते समय नीचे वह गिरी। तभी उस सुन्दरी ने बेबी के घाव पर पट्टी बाँधी। प्रोफेसर आनेसे वे बेबी को डाक्टर के पास ले गए। तभी डाक्टर पट्टी के बारेमें तारीफ करते हैं। वर्मा बेबी को लेकर घर आते हैं। जिस दिन से बेबी बीमार है उस दिन से वही सुन्दरी उनका हाल पूछने को आती है वह हर दिन आना प्रो.वर्मा को अच्छा नहीं लगता तब वे पत्नी से उनको मना करने के लिए

कहते हैं । पत्नी यह नहीं कर पाती क्योंकि उनका स्वभाव ही कुछ वैसा है । बेबी की जख्म भर जाती है और उसका आना भी कम होता है, पर प्रेम की गहराई बढी है ।

वह सुन्दरी अपने पति के जन्मदिन पर वर्मा परिवार को बुलाती है । बेबी खिलौनों से खेलती है । वह उनको तोड न दे इसीलिए वर्मा उन्हें बुलाते हैं परंतु बेबी मागती है तब तिपाई पर रखे हुए खिलौने टूट जाते हैं । यह देखकर प्रोफेसर क्रोधित होते हैं । पर वह सुन्दरी आनंदित होकर उन्हें गोद में लेती है । कहती है, ' खिलौनों का मूल्य खेलनेमें है और जब उनसे खेला जाएगा, तो उनका टूटना जरुरी है । न जाने कबसे रखे थे । न कोई छूता था, न खेलता था । ' देखते -देखते आँखें थक गई थी । आज बेबी ने उसी थकान को दूर किया है ।[२०] वह हंसती रहती है । प्रोफेसर देखते हैं । उनकी विजय है । वे मन ही मन कहते हैं, इतने बडे अभाव को हृदय में छिपाकर भी जो इतना खुल कर हंस सकता है उस व्यक्ति को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ।

इस कहानी में सामाजिक समस्या और नारी की पीडा का चित्रण है । नारी स्थान सन्तान के बिना अधूरा है । जो बाहर से सुन्दरी और अन्दर से भी वैसी है । वह दूसरों के बच्चों को अपना समझकर प्यार करती है लेकिन कुछ लोगों को यह अच्छा नहीं लगता । वे उनके मन में कुछ और ही विचार होते हैं कि जो अपने मन में है वही दूसरों के भी हो यही सोचकर दूसरों के साथ वैसा आचरण करते हैं । प्रोफेसर जैसे ज्ञानी व्यक्ति भी मन से संकुचित हैं । जो समाज के सामने आदर रखने वाला ही अगर उस आदर की कदर न करनेवाला होगा तो उसकी शिक्षा का उपयोग कुछ नहीं है । उस सुन्दरी के मन में सन्तान का अभाव रहता है । कहानी का शीर्षक उचित है ।

१४) हिमालय की बेटी --

यह कहानी लेखक को उनके बडे भाई ने सुनाई थी । रेवती का जन्म हिम - प्रदेश में हुआ था । वह श्रम बहुत करती । रेवती के सम्पर्क में श्रीधर और कुशलानंद आते हैं । श्रीधर देखने में अच्छा था, पर उसका एकान्त भोलापन यह अवगुण था तो

12544

A

कुशलानंद से मिलने वह पहाडी पर जाती । उसका रुझान कुशलानंद की ओर था । पर वह श्रीधर को भी मन से हटा नहीं सकती । इसी उलझन में उसने एक दिन पाया कि वह माँ बनने वाली है । वह डर कर कुशलानंद के पास गई । उसने विश्वास दिया पर विवाह न करके ही वह सेना में भरती हो गया । रेवती को बहुत दु:ख होता है । उसके साथ अविश्वास होने के कारण श्रीधर उसके साथ शादी करता है । उन्हें किशुन नामका बेटा हो जाता है । पाँच वर्ष बीत गए पर वे दोनों एक दूसरे के न बन सके । रेवती वेदनामय गीत गाती तो श्रीधर शराब पीता रहता । एक दिन वह वेदनामयगीत गाकर रो रही थी की उन्हें खबर मिली कि किशुन को बचाते समय ट्रक के नीचे श्रीधर का पैर कट गया । तब वह दु:खी होकर डाक्टर से कहती हैं, क्यों डाक्टर जी । क्या मेरी टांग काटकर नहीं लगाई जा सकती ?[२१] उसे दु:ख होता है कि यह सब मेरी वजहसे हो गया है ।

एक दिन द्वार पर सैनिक के रुप में कुशलानंद आता है । वह क्रोधित होती है पर वह क्षमा माँगता है और चला जाता है । अब श्रीधर अधिक शराब पीता है और मार पीट भी करता है । एक दिन श्रीधर नशे में ट्रक के कारण नहर में जा गिरा । तीसरे दिन उसकी लाश मिली । रेवती को फिर वेदनामय गीतों की याद आ गई । अगले दिन कुशलानंद आता है । वह उनसे फिर भी नफरत करती है लेकिन उसके बारेमें मन में प्यार होने के कारण उसे वह अपनाना चाहती है । वह कहती है" लेकिन जिसने दो दो बार तुम्हारे बेटे के शरीर में अपने प्राण उँडेले,उसकी तो मेरे पास याद ही बाकी है ।"[२२] हाथ जोडती हूँ । उसे अपवित्र मत करो । तुम चले जाओ । वह जाता है । पर रेवती अब अपने आँसू आप ही पिएगी और जिएगी ।

इस कहानी में पारिवारिक और आर्थिक समस्या का चित्रण है । श्रीधर जैसे युवक दूसरों के सुख के लिए अपने जान की कुर्बानी करनेवाले आज कम ही है । श्रीधर के मन में किसी भी प्रकार की लालसा नहीं है उसका प्रेम स्वार्थ के लिए नहीं है । अपना बेटा न होकर भी श्रीधर उससे एक पिता के जैसा प्यार करता है फिर भी रेवती कुशलानंद को ही चाहती है । रेवती का प्रेम सच्चा प्रेम है परंतु कुशलानंद प्यार के काबिल नहीं है । वह प्यार करना चाहता है । परंतु माँ-बाप

को छोड़कर नहीं । इसी कारण रेवती के जीवन में एक तरहसे भूकंप निर्माण होता है ।

१५) चाची --

यह कहानी लेखक ने अपने पडोसी चाची की मृत्यु होने के बाद उन्होंने जो अनुभव किया था वही लिखा हैं । चाची सभी लोगों पर शासन करती थी । पति था तब पति पर और अब बहुओं पर हुकूमत चलाती । वह जितना प्यार करती उतनी ही दुश्मनी करती थी । मैं उसके सामने वाले मकान में बसा तो मुझे चेतावनी दी गई चाची से बचकर रहना । पर मुझे नौ सालों में ऐसा अनुभव नहीं आया । अब मैं जा रहा हूँ तो उसे बहुत दु:ख हो रहा था । वह मुझे अपनी करुण कहानी सुनाती है । पति के बाद बेटेने मुझे डुबाया । इतना पैसा था सब लुटा दिया । लेखक ने पूछा,` किसे लुटा दिया ।` चाची बोली,` जो भी आता,खुशामद करता, उसी को कर्ज दे देता और वापस न माँगता । मैं पीछे पडती तो कह देता,अब जाने भी दे,गरीब है,कहाँ से देगा ।`[२३] वह मेरी माँ के पास कुछ पैसे जमा कराती रहती ।

एक दिन बेटा बहाना बनाकर सभी रुपये लेता है । चाची ने जिससे मित्रता की उसे निभा दिया,जिसे शत्रु मान लिया उसे मिटा दिया ।

इस कहानी में आर्थिक समस्याओं का चित्रण हैं । यह कहानी एक व्यक्तिका चित्र है । वह व्यक्ति हमारी तरह हाड-मांस का व्यक्ति था । कल्पना का नहीं ।

चाची जैसी आज भी कुछ औरते मिलती है जो दूसरों को सताती नहीं अपने ही घर वालों को सताती है । पडोसी चाची से कोई बूरे अनुभव करते परंतु लेखक को ऐसा अनुभव कभी भी नहीं आता ।

१६) शरीर से परे --

प्रदीप और रश्मि की मुलाकात किसी पिकनिक पार्टी में हो गई थी । रश्मि उनकी रचनाएँ पढती है । रश्मि की और प्रदीप की दूसरी बार मुलाकात होती है कि जैसे वे युग युग से उन्हें पहचानती है ऐसा दिखाती है । बाद में उनके घर तक आना जाना रहा । उसके पति सरकारी अफसर थे । एक दिन उनकी मुलाकात होती हैं । एक दिन वे दोनों एकांत में नदी किनारे सटक कर बैठे थे ।

न जाने प्रदीपने उसे चूम लिया और अपनेसे मुक्त किया तब वह बोली ` मुझे अपने से दूर मत करो । मैं तो सदा तुम्हारे साथ रहती हूँ ,मैं तुम्हें चाहती हूँ,शरीर को नहीं । मैंने कहा, तुम मेरे पास मत आया करो ।` वह चली गई ।

रश्मि घर आकर देखती है कि उसके पति सुरेश बरामदे में टहल रहे हैं । मैं जैसे ही ऊपर चढी, वे बोले,` रश्मि ।` जी ।` घूमने गई थीं ?`` जी ` । `प्रदीप के साथ ?` ,` जी` । फिर उसे छोड कहाँ आई ?` वे अपने घर गए ।` ` और तुम ?` ,` मैं अपने घर आ गई ?` ,` जी हाँ । वे सहसा तेज हो उठे ` दुष्टा ।` दूर हो जा मेरी आँखों के सामने से ।यह तेरा घर नहीं है । मैं तुझे अन्दर नहीं आने दूँगा ।`[२४] पर वह अन्दर गई । वह बोले, प्रदीप के पास जाओ । मैं उनके पास कभी नहीं जाऊँगी । कुछ दिनों के बाद वातावरण शांत हो गया । पर उसे खोई हुई देखकर फिर झगडा शुरु होता है,इतने में प्रदीप आता है और एक पत्र सुरेश के हाथ देकर जाता है । उसमें लिखा था प्रियमित्र, खेद है मेरे कारण आपके शांत जीवन में तूफान आ गया है,पर विश्वास करिए मैंने इसे कभी नहीं चाहा । मैं कल यह नगर छोड रहा हूँ। पत्र पढकर दोनों का भी तनाव ढीला होता है । स्टेशन पर शिष्टाचार के नाते सुरेश उन्हें पहुँचाने के लिए जाता है ।

प्रदीप ने रश्मि को भूलने का प्रयत्न किया पर वह उसकी हर रचनामें उपस्थित है । उसने नीरजा से विवाह किया और अपनी कहानी सुनाई । वह बोली, अपने आदर्श को वह तुममें पाती रही है । जहाँ आदर्श है वहाँ अद्वैत है । इसमें शरीर आ ही नही सकता । एक दिन सुरेश ने आकर रश्मिकी मृत्यु की खबर दी । वह बोला,` प्रदीप सच कहूँ तो मैंने ही उसकी हत्या की है । बीमारी तो बहाना थी । उसके सूट केस में कुछ पैकेट मिले जो प्रदीप के नाम लिखे थे । रश्मि की मौत का समाचार पाकर नीरू कहती है,नहीं वह मर नहीं सकती । वह आज भी जिन्दा है और सदा जिन्दा रहेगी । सुरेश चले गये उसके बाद कभी नहीं आए । एक बार बम्बई में अचानक उनसे मेरी भेट हो गई । उसके साथ एक नारी थी । शायद उनकी पत्नी होगी । तब रश्मि की याद करके पहली बार मेरी आँखें भर आई । यह कहानी प्रेम के आदर्शवादी स्वरुप को प्रमाणित करने के लिए लिखी गयी है ।

प्रेम शारीरिक वासना से कहीं ऊपर की दिव्य वस्तु है जिसका संबंध दो आत्माओं के मिलन से है ।

` शरीर से परे ` इस कहानी में विष्णु प्रभाकर जी ने भावनीक प्रेम की चर्चा की है । प्रदीप साहित्यिक है और रश्मि उसके साहित्य से प्रेम करने वाली विवाहिता । प्रेम अनेक प्रकार का होता है । पति-पत्नी के प्रेम में शारीरिक आकर्षण के साथ साथ कर्तव्य की भावना रहती है ।

१७) स्वर्ग और मर्त्य --

इस कहानी की नायिका एक चिर यौवना रूपसी उर्वशी है । उसकी सुन्दरता पर राजा नहुष मुग्ध है । राजा उसको अपनाना चाहते हैं । उर्वशीने अपनी वाणी से राजा के मन में वासना निर्माण की । वह सखी से कहती है," जानती हूँ मैंने ही तो उस नरपुंगव में वासना की अग्नि प्रज्वलित की है । वह वासना हमारी वासना की तरह निरपेक्ष नहीं है । वह नर की वासना है । उसमें शोले उठते हैं और उन शोलों में पडकर स्वयं नर ही नहीं,बल्कि समस्त संसार मस्मसात हो जाता है...." २५

शचि इन्द्राणी को देखकर महाराज उसकी उर्वशी से तुलना करते है तब उन्हें इन्द्राणी ही उससे अधिक आकर्षक लगती है । वे उसको अपनी इन्द्राणी बनाना चाहते हैं परंतु देवलोक वासियों में एक मत नहीं है । परंतु चर्चा के बाद एक मत होकर इन्द्राणी को नहुष को लेने की आज्ञा देते है परंतु इन्द्राणी की एक शर्त पर वह कहती है कि महाराज की पालकी को उठानेवाले ऋषि हो । शर्त मंजूर करते है । पालकी उठाई पर चाल धीमी होने के कारण महाराज क्रोधित होकर पैर पटकते है और उनका पैर ऋषिको लगने के कारण वे पालकी को पटक देते है । तब महाराज को एक स्वर सुनाई देता हैं आज गिरा हूँ तो क्या हुआ, कल फिर उठूँगा ` और इससे उर्वशी के अन्तर को जैसे झंकृत कर दिया । उसके नयनों के कोर भीग आये ।

इस कहानी में स्वर्ग लोक का चित्रण है । अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए मनुष्य कुछ भी कर सकता हैं इसको स्पष्ट रूपसे दिखाया है । साथ ही साथ इसमें

वासना का संघर्ष और महत्वाकांक्षा की जीत का भी चित्रण किया है। देवलोक वासी हो या भू लोक वासी हो उन सभी के मन में स्त्रियों के सौन्दर्य की लालसा रहती है और उस सौन्दर्य को अपनाने के लिए वे अपना सर्वस्व उनपर लूटा देते है। जो देवलोकों में सौन्दर्य की लालसा थी वही आज तक चलती आई है और इससे आगे भी वह चलती रहेगी इसमें शक नही।

१८) सॉचे और कला --

हरिया की बेटी दुलारी दीवाली के लिए खिलौने बनाती है। वे जात के कुम्हार है। उसने यह कला बिरजू से सीकि है। बिरजू सॉचे को तोडकर समय का उपयोग करके कुछ नयी कला निर्माण करता है। दुलारी कुछ मूर्तियॉ बिरजू के पास रखती है। दुलारी शादी तय हो जाने के कारण वह बिरजू ने बनाई राधा-कृष्ण की मूर्ति लेखक के पास रखती है। और कहती है,बस आप ही उसकी सचाई को समझाते है। उसी बहाने कभी कभी आया करूँगी।

वह मूर्ति अभी तक मेरे पास रखी है,पर उसके बाद न तो बिरजू उसे देखने आया, न दुलारी। शादी के बाद दुलारी खिलौने तैयार करके कला के साथ अर्थ प्राप्ति भी कर रही है। मेरे पास जो मूर्तियॉ रखी है उसके पास मैंने राधा-कृष्ण की एक साधारण मूरत रखकर नीचे लिखा है -- राधा-कृष्ण सॉचे और कला।

इस कहानी में एक शिल्पकार कुम्हार के परिवार का चित्रण है। इसमें आर्थिक समस्या को स्पष्ट किया है। उस राधा-कृष्ण की मूर्ति के पीछे का भाव महत्वपूर्ण है,जिसे लेखक ही समझाते है। इसीलिए लेखक इस प्रेम भाव को जतन करके रख लेते है। ऐसी बहुत सी मूर्तियॉ बनाई जा सकती है लेकिन वे सॉचे की मूर्तियॉ है। परंतु यह मूर्ति सॉचे की होकर भी अधिक कलात्मक है। क्योंकि इसके पीछे प्रेम का भाव है। इस कहानी में लेखक ने स्वयं एक प्रेमी के प्रेम को जतन किया है।

१९) नई ज्यामिति --

नयनतारा एक रुपवती युवती है, लेकिन वह अनाथ है। शरण के मन में उसके प्रति दया का भाव निर्माण होने के कारण वह त्रिलोकीनाथ को उसके बारे में सब बताता है। नयनतारा शरण से कहती है कि मेरे पास धन-सम्पदा,

माँ-बाप, कुलमर्यादा कुछ भी नहीं तो मेरे साथ कौन विवाह करेगा । उसे शरण कहना है,' तुम एक फूल हो और फूल का उपयोग जानना चाहती हो तो भौरों से पूछो ।' एक दिन शरण के कहने पर त्रिलोकीनाथ नयनतारा के घर जाते है तब वह उन्हें गलत समझाती है । त्रिलोकीनाथ क्रोधित होकर चले जाते है ।

एक दिन त्रिलोकीनाथ की बेटी मृणाल उनके घर आकर उन्हें समझाती है परंतु वह मानती नहीं वह कहती है " मेरे लिए ईमानदारी से जीने का एक मात्र रास्ता वेश्या बनकर जीना है ।"[२६] मेरे पास रूप है यौवन है । मैं किसी एक की होना चाहती हूँ, पर दुनिया कहती है तुम अनाथ हो तुम्हें घर में लाना पाप है । मृणाल तुम चली जाओं और फिर कभी भूलकर इधर मत आना । मृणाल उन्हें अपनी बहन मानकर चली जाती है । मृणाल शरण से विवाह करती है और यहाँ नयनतारा का भी विवाह एक मंत्री महोदय के सुपुत्र प्रणवीर वर्मा के साथ होता है । मंत्रीजी की वह सौन्दर्य के कारण सचिव बनती है तब मंत्रीजी उनके सौन्दर्य को अपनाना चाहते हैं परंतु उनका पुत्र उसे ही अपना बनाना चाहता हैं और यही हो जाता है ।

इस कहानी में सामाजिक समस्या का चित्रण हैं यौन और प्रेम के साथ हीं भ्रष्टाचार और शिष्टाचार को भी स्पष्ट दिखाया है । विवाह लडकी के जीवन में महत्वपूर्ण है । परंतु जिसका विवाह करना है उसे कोई पूछता ही नहीं । ऊँचे कुल में धन देखकर ही लडकी की शादी की जाती है । परंतु आज जमाना बदल गया है । लडकी अपनी इच्छाओं के अनुसार शादी करना चाहती है । माँ-बाप तो अपने अपने दृष्टिकोण से ही देखते है और लडकी की शादी करना चाहते है । वे समझाते है कि लडकी तो पराये घर का धन हैं और इसीलिए वह उस धन को दूसरे को सौंपकर स्वयं जल्दी-से-जल्दी मुक्त होना चाहते हैं । आज भी समाज में लडकी और लडके में भेद किया जाता है । लडकियों की ओर देखने का दृष्टिकोण ही कुछ अलग है । उसे आज भी समाज में गौण स्थान दिया जाता है । उसे अबला समझा जाता है । हमारी पुरुष प्रधान संस्कृतिने हर समय स्त्रियों पर अन्याय ही किये हैं ।

२०) कैक्टस के फूल --

गिरीश को अपने सामने के बर्थ पर बैठे युवक और युवती को देखकर अपने जीवन में घटी घटना याद आती है। जो कहानी के रुप में स्पष्ट है। एक साहित्यिक समारोह में गिरीश ने कहानी पढी। सुनकर लोगों ने बधाई दी जीसमें प्रेमा नाम की एक युवती भी थी। वह भी कहानी लेखिका है। वह गिरीश की शिष्या बनती है। वे दोनों विवाह करना चाहते है परंतु गिरीश ब्राह्मण और प्रेमा कायस्थ होने के कारण गिरीश के पिता मना करते है। लेकिन गिरीश उसके साथ विवाह करता है। गिरीश प्रेमा को जो कहानी लेखिका के रुप में प्रसिध्दी मिली उसमें खो गया। एक दिन उसने अपने कानोंसे सुना- गिरीश की कहानी प्रेमा की कहानीकी परिछाया है।.... गिरीश की कहानी प्रेमा की कहानी की जूठन है। आलोचक उसकी कला को सराहते हैं, पाठक उसकी उक्तियाँ गुनगुनाते हैं,श्रोता उसके व्यंग्य में रस लेते है और पत्र बार-बार उस पर लेख लिखते है।" २७

कुछ दिनों के बाद पाया कि प्रेमा दूर प्रान्त के प्रसिध्द साहित्यिक के पास पहूँच चुकी है। गिरीश की नींद टूट जाने से उसने एक ध्वनि सुनी और वह ट्रेन से उस दिशा की तरफ कूद पडा और देखा तो एक व्यक्ति एक युवती को पीट रहा है। वे दोनों एक दूसरे को पहचानते है। प्रेमा उसे पुकारती है परंतु वह चला जाता है। घर लौटकर गिरीशने प्रेमा से पत्र लिखा - कि प्रतिष्ठा के अहम से आज मुक्ति मिली है। कानून का द्वार बन्द कर रहा हूँ। तुम्हारे दावे का प्रतिरोध नहीं करूँगा।

इस कहानी में मनोवैज्ञानिकता और प्रेम विवाह के साथ ही साहित्यकार की प्रतिष्ठा का चित्रण है। कहानी की मध्यवर्ती कल्पना एक नायिका का चित्रण है। आज तक जो नायिकाओं का चित्रण हुआ है उसके विपरीत इसमें नायिका का चित्रण है। ऐसी स्त्रियों को आज भी हम समाज में देखते है। ऐसी कुछ गिनी - चुनी स्त्रियाँ मिलती है उनमें यह एक है। आज हर एक को प्रसिध्दी चाहिए और उसको पाने के लिए वह कुछ भी करता है। यह प्रसिध्दी कैक्टस के फूल की तरह है जो कभी कभार उसे मिलती है, हर समय नहीं। नायिका झूठी प्रतिष्ठा के पीछे

दौड़ती है और उसमें उसकी शोकान्तिका हो जाती है। माँ-बाप के विरुध्द गिरीश शादी करता है और ऐसी पत्नी होने के कारण निराश होता है। इसमें उँच-नीच कुल की समस्या दिखाई देती है। स्त्री झूठी प्रतिष्ठा के पीछे भागना चाहती है और उसमें वह स्वयं को ही मिटा देती है।

२१) छोटा चोर बड़ा चोर --

बड़े बाबू के घर एक सेवक है। वह बहुत इमानदार है। उसके पिता सर्दियों से बीमार होने के कारण वह बाबू के कोटों में से एक कोट चुराता है। और अपने भाई के पास भेजने के लिए जाता है। जाते समय वह कोट को दाहिने कन्धे से उतारता है, तभी उसे किसीने पुकारा - ओ जानेवाले ठहर। देखा तो एक बच्चा बोला तुम्हारे कोट की जेब से यह गिर गई है।"[२८] देखा तो वह घडी की चैन है और उसका रंग पीला है। उसे लगा कि मैं चोर हूँ, मुझे सजा होनी चाहिए। इसी विचार से वह कोट लेकर बाबू के घर लौटता है।

अन्दर देखा तो बाबू किसी ठेकेदार से बातें कर रहे हैं। ठेकेदार ने बाबू को रिश्वत में कॉफी और एक घडी की चैन दी और कहा समझो कि आपकी खोई चैन मिल गई है। ठेकेदार उठा इतनमें सेवक बाबू के पैरों पर गिरा और बोला यह कोट और चैन मैंने एक महीना पहले चुराई थी। यह सुनकर बाबू क्रोधित हो गए और बाबू ने सभी ओर देखा। देखकर उनके नयन रक्तवर्ण होने लगे।

इस कहानी में सामाजिक भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी का वर्णन है। और दीन लोगों की दैनिय स्थिति का भी चित्रण हुआ है। चोर होकर भी एक इमानदार सेवक होने के नाते उन्होंने चोरी करके सच्चाई को सामने रखा। वह चोर है लेकिन उन्होंने जो चोरी कि है वही जरूरत होने के कारण की है। चोरी करके अपने आप को चोर साबित करना यही उसकी महानता है।

२२) एक पुरानी कहानी --

अनवर का लड़का बीमार है इसीलिए वह डा.योगेश के घर आता है परंतु डाक्टर नहीं जाते। उन्हें नींद भी नहीं आती। डाक्टर को एक पुरानी कहानी याद आती है। उस दिन वे डाक्टर नहीं थे। वे काम के लिए ताँगे से जा रहे थे

और उसी तांगे में उनके साथ एक बारह तेरह वर्ष की लड़की और बालक थे । वे पठानों की गली में रहते हैं । उतरते समय योगेश बोला, मैं छोड आऊँ । बालिकाने उसकी ओर देखा । मुस्कराई,शुक्रिया माई जान,हम तो रोज ही आते हैं। योगेश ने फिर कभी उस बालिका को देखा नहीं । लेकिन देखने की चाह आज तक बनी है । उन्हें याद आता है कि शायद उस बालिका का तो बच्चा न हो । वे बैग उठाकर पठानों की गली में गये । डाक्टर योगेश अनवर की बीवी को दवाई के बारे में जानकारी देते हैं, तब बेगम बोली,समझा गई डाक्टर साहब । यह स्वर सुनकर वे दोनों चौंक पडें । डाक्टर अनवर से बोले आप यहाँ कब से रहते हैं । वह बोला इसी सालसे आया हूँ और यहाँ के लोगों को पहचानता तक नहीं ।क्यों अनवर । यहाँ मुमताज नाम की कोई लड़की रहती है । वे दोनों बोले,मुमताज । हम नहीं जानते । वे चलने के लिए उठे तब अनवर ने रुपये जेब से निकाले पर वे बोले नहीं आज नहीं । और वे चले गए । उन्हें लगा कि उनका सर्वस्व लूट गया है। डाक्टरने बेगम के रुपमें मुमताज को अवश्य पाया है । और मैं सोचता हू कि क्या यह कहानी पुरानी है । क्या यह कभी हो सकती है ?"

इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम का चित्रण है । एक डाक्टर का कर्तव्य जो होता है यही इसमें बताया है । मानवतावादी भाव को स्पष्ट दिखाया है । इसमें बाल सुलभ भाव को बताया है । योगेश के मन में वही बालिका को देखने की चाह आज तक बनी है ।बाल मन पर जो असर होता है वही बहुत गहरा होता है। कहानी बाल अवस्था की होकर भी उन्हें युवा वस्ता तक ठीक तरहसे याद है और वही कहानी पुरानी होकर भी नयी है ऐसा लगता है ।

२३) समझौता --

अनिरुध्द एक व्यापारी है । उसकी पत्नी आयशा अत्यन्त रुपवती थी परंतु वह एक वेश्या की बेटी थी जिसे सेठ रायचन्दने पढा-लिखा कर एक सभ्य समाज की महीला बनाया था । अनिरुध्द व्यापार में गढता जा रहा था और घर में आयशा से बचता रहता है । वह शिमला से लौटता है तब आयशा ना घर ना ऑफिस में उसे एक पत्र उसने लिखा हुआ मिला वह पत्र पढने लगा अनिरुध्द व्यापार में तुम पर बडा संकट निर्माण हुआ है और उसमें तुम्हारा सर्वनाश हो सकता है ।

यही मुझे तुम्हारे ऑफिसर मित्र जो अविवाहित है और तुम्हारे साथ घर पर आता है ,उसने बताया । मैंने उसे कहा बचने का कोई उपाय है ? वह बोला ' आप सौदा करना चाहती है '[२९] मैंने कॉपते हुए कहा, आपको लज्जा नहीं आती । तुम्हें याद होगा कि उस दिन तुमने भी कुछ नहीं पूछा और मैंने भी नहीं बताया ।

कुछ दिनों के बाद मैंने अपने सामने सर्वनाश देखा और उस सन्ध्या मैं उसके पास पहुँची और उस रात मैंने उस पापी की सेज पर आत्मसमर्पण कर दिया । अनिरुध्द पढकर हँसा आखिर है तो वेश्या की बेटी । वह क्रोधित होता है इतने में नौकर कहता है मेमसाब आ गई है और अपने कमरेमें रो रही है । अनिरुध्द वहाँ जाकर उसे विश्वास देता है और कहता है,जीने के लिए पाप करना बुरा नहीं है, पर उसे छिपकर करना चाहिए । जीवन के लिए समझौता अनिवार्य है और इसके लिए किया गया कोई भी काम पाप नहीं हो सकता ।'

इस कहानी मैं सामाजिक समस्या है । यौन संबंधों के साथ ही उच्च समाज का चित्रण है ।भ्रष्टाचार और व्यभिचार का समावेश दिखाई देता है । उच्च समाज मैं सब कुछ चलता है । अपने स्वार्थ और प्रतिष्ठा के लिए अपनी पत्नी के सौन्दर्य और शरीर का व्यापार करने वालों की आज के आधुनिक जीवन मैं कमी नहीं है । उच्च समाज में पत्नी की अपेक्षा स्वार्थ महत्वपूर्ण माना जाता है । अपने स्वार्थ के लिए गृहलक्ष्मी की इज्जत भी बेचना उनके लिए मामूली-सी बात है । इतना होने के बाद भी अन्त में कहा है कि जीवन में जीने के लिए समझौता महत्वपूर्ण है । समझौता अगर नहीं होगा तो जीना मुश्किल हो जाता है इसीलिए हर समय समझौता अनिवार्य है ।

२४) पुल टूटने से पहले --

लेखक और उनके एक मित्र की भेंट होटल में होती है और वे दोनों कॉफी में एक-एक चमच चीनी डालते है क्योंकि महंगाई है इसीलिए । लेखक कहते हैं कि कुछ दिन मैं पैसे न होने के कारण घर से बाहर नही निकलता । पत्नी कहती है कि इतनी आमदनी में केवल दो जून रोटी मिल सकती है । लोग धन लेते ही हैं देते कुछ भी नहीं । सभी दल नम्बर दो के पैसे से चुनाव लडते हैं और बे ईमानी लोग दूसरों

के साथ बेईमानी ही करते हैं । मैं गांधीवादी विचार धारा का हूँ । मेरी पत्नी आबरू ढकी रखने को पेट काटने की बात करती है और कुछ लोग हैं कि पेट भरने को आबरू बेच देते हैं ।

उन्होंने दो स्लाइस निकाली और दोनों ने एक एक ली । आपको आचरज होगा मैंने इसे सडक पर से उठाया था । जो आप खा रहे हैं। घर पर मैंने पत्नी के हाथ में पैकेट दिया पर उसने उसे कहासे लाया यह भी नहीं पूछा । जीहाँ,बस,आपको यह राज पहली बार बता रहा हू । पत्नी से यह सब कैसे कहता ? सडक पर की उठाई रोटी लेती वह ? हमारे वर्ग के लोग आबरू का बडा खयाल करते है जनाब ।*30 करने दीजिए, आज तो इसी सडक की रोटी ने मेरी आबरू बचाई । इस थैले में जो मखाने हैं वही भी मुझे मुक्त में मिले हैं । शव के ऊपर पैसे और मखाने मुक्त हस्तसे वारेजा रहे थे । एकाएक मस्तिष्क में एक विचार कौंध गया कितनी बर्बादी है यह देखकर मैं इसे उठाके ले आया । घर आकर पत्नी से कुछ नहीं कहा ।किसी को अपने कर्म में सहभागी बना लिया जाए इससे बढा प्रायश्चित क्या हो सकता है । इसीलिए मैं इन्हें थैले में डाल कर ले आया । अच्छा चलेंगे ? जी हाँ मैं भी चलता हूँ ।

इस कहानी में राजनीतिक भ्रष्टाचार और आर्थिक समस्याओंका चित्रण है । जीने के लिए कभी कभी कितना नीचे उतरना पडता है,यह दिखाया है । चुनाव में और सरकारी कारोबारों में किस तरह भ्रष्टाचार चलता है इसका सही रूप से लेखक ने वर्णन किया है । चुनाव में लोगों को खरीदा जाता है और नेता लोग उन लोगों पर ही राज करता है । भ्रष्टाचार यह समाज को लगा हूआ कलंक है जो धो नहीं जा सकता । आज भी इससे बहुत कठीन परिस्थितियों से लोगों को सामना करना पड रहा हैं । युवक और युवतियाँ खूलें बजार में बीके जा रहे हैं । कुछ लोग अपने आपको लूट देते हैं तो कुछ लूटाते हैं ।

२५) <u>मटकन और मटकन --</u>

सर्वजीत और सांत्वना एकही गाडी से जा रहे हैं । और दोनों एक कूपे मेंबैठे है । सर्वजीत डाइनिंग कार में खाना खाने के लिए गया और सांत्वना विचारों में खो गयी । सोचते-सोचते जैसे जूडिथ उसके पास खडी हुई ,अपनी बच्ची के साथ ।

सांत्वना बोली `, क्या तुम्हारे पति भी इसी केन्द्र में है ? जूडिथ ने कहा,' मेरी तो शादी ही नहीं हुई पर इसके पिता वे अवश्य हैं । उनसे ही इस लम्बी यात्रा में मैंने यह सुन्दर बच्ची प्राप्त की है ।'[३१] तो तुम्हारे और भी मित्र होंगे ? बहुत हैं । सहसा वह चौक पड़ी । सर्वजीत लौट आया था । वह सांत्वना को स्कॉच पीने के लिए मजबूर करता है परंतु वह तैयार नहीं होती वह कहता है,तुम जूडिथ से कही आकर्षक हो,मैं तुमसे प्रेम करता हूँ । वह यह सुनकर क्रोधित होकर चीख उठी इतने में द्वार पर आहट हुई । सांत्वनाने द्वार खोला तो आगन्तुक ने कहा` आश्चर्य यहाँ तो बस आपके पति हैं । चीख सुनकर मैं नींद में चौक उठा था । लगा था जैसे आपके साथ कोई जबरदस्ती कर रहा हो ।'[३२] वह बोली, अब जाइए । सर्वजीत बोला,` मुझे बहुत अफसोस है । वह लिखते लिखते सोच रही थी कि मैं विधवा हूँ । मेरे दो बच्चे हैं । पर शरीर की प्यास अभी शेष है । मैं उससे इनकार भी नहीं करती और सहज भाव से स्वीकार भी नहीं करती । उसके मस्तिष्क में अनेक विचारों का शोर चल रहा था ।

सांत्वना अपने पति विनोद के बारे में सोचती जा रही थी । उनसे जो बात होती है उससे वह चीख उठी और आँखें खोलकर देखा तो सर्वजीत उसके उपर झुक आया था ,देखकर वह बोली, तुममें और उस पुलिस इंस्पेक्टर में अन्तर क्या है, जिसने दूध लेने जाती हुई एक औरत पर बलात्कार किया था । वह क्रोधित होकर बोली इतने में फिर द्वार पर थपथपाहट हुई । सर्वजीत ने देखा तो उसका एक मित्र निगम था । निगम ने कहा, मिसेज थापर । हम दोनों यार है मैं यहा बैठ सकता हूँ , सर्वजीत ? सांत्वनाने कहा, यह कूपे है और रात अभी शेष है । वह बोला सर्वजीत एक बात याद रखना ` यह भारत है यहाँ शोर नहीं मचाना चाहिए । वह बाहर वाले को खींच लेता है। स्टेशन आता है और वह उतरती है । सर्वजीत कहता है,` तुम भाग रही हो, सांत्वना । कब तक भागती रहोगी ? वह चली जाती है और वह वहाँ खडा रह जाता है ।

सांत्वना के मन में सर्वजीत के प्रति प्रेम है परंतु लोक लज्जा के कारण वह व्यक्त नहीं करती । वह एक विधवा होने के कारण अपने मन की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकती । इस कहानी में सामाजिक समस्या का चित्रण है । एक

विधवा होकर भी उन्होंने शिष्टाचार का पालन किया है ।

२६) एक मौत समन्दर किनारे --

पत्रकार ललित बागची शैलेन्द्र का पुराना यार है, जो आज एक फर्मका डायरेक्टर है, जहाँ से वह प्रतिदिन तेरह हजार रुपये नंबर दो का धन प्राप्त करता है । वह पूछता है, क्या करते हैं आप इतने धन का ? बागची कहते हैं, उसका एक भाग विलासिता पर खर्च होता है और दूसरा राजनीतिक पार्टियों को जाता है । सत्ता सेवा से नहीं,काले धन से प्राप्त की जाती है । और फिर सत्ता से काला धन अर्जित किया जाता है । सेठ बाजोरिया की नीजी सचिव जाबाला है और उसे ही मिलने शैलेन्द्र आता है । जाबाला आवारा है और किसी के तलाश में निरन्तर बेचैन रहती है । वह हर एक विषयों पर कहानियाँ लिखती हैं और पत्रकार बनने के लिए रिसर्च कर रही है । वह उनकी कहानियाँ पढता है । वह सुनता है कि अल्ताफ के साथ उसकी शादी हो गई है और वे दोनों टकराव के कारण अलग हो गये हैं ।

एक दिन वह शैलेन्द्र के कमरे में आती है । उनमें कुछ बातें होती हैं सेठ बाजोरिया अब फिल्म प्रोड्यूसर बन गये है और पहली कहानी जाबाला की है । शैलेन्द्र को वह एकान्त में ले जाती है और उनसे साहित्यिक बातें करतीं हैं । वह एकाएक कहती है,` एक बात पूछूँ,शैलेनदा ! कभी आपका मन आत्महत्या करने को हुआ है । हाँ मृत्यु मुझे बहुत सुन्दर लगती है। तुम मौत को इतना प्यार क्यों करती हो ?

वह उसकी ओर देखकर कहती है क्योंकि वह भी एक तलाश है । जिन्दगी सुख की तलाश में भटकती है और मौत सत्य की , सुकरात ने आखिर इसी सत्य की तलाश के लिए होती जहर का प्याला पिया था ।[33] बहुत कुछ बातें होने के बाद जाबला शैलेन्द्र के हाथ में एक पैकेट देती है और चली जाती है । पैकेट में एक हजार के नोट है और लिखा है,` कहानी के लिए अग्रिम` राह न दिखाइये । एक वर्ष तक उनकी भेट नही होती बीच बीच में बस पत्र आते हैं ।

एक दिन बागची का पत्र आता है और उसमें लिखा है समुद्र में डूब जाने

के कारण कल जाबाला और बाजोरिया का प्राणान्त हो गया । उसका प्राणहीन शरीर रेत पर पड़ा मिला ।

इस कहानी में एक आधुनिक स्वच्छंदतावादी स्त्री का चित्रण है । साथ ही राजनीतिक भ्रष्टाचार और आर्थिक समस्याओं को भी स्पष्ट किया है । मनुष्य पैसों के बल पर कुछ भी कर सकता है यही इस कहानी में बताया है । काला धन प्राप्त करने वाले का तन और मन भी काला ही होता है और उसीका अन्त भी उसमें ही होता है ।

२७) एक रात : एक शव --

सुरेश की पत्नी प्रमिला सुशिक्षित और सुन्दर है । उनके ससुर ताऊजी को एक संध्या अपने छोटे भाई कमल किशोर की याद आती है जो पचीस वर्ष पूर्व तालाब में डूब कर मर गया था । उनके तीन बच्चों को ताऊजी ने ही शिक्षा दी थी । दिनेश लन्दन में है । ताऊजी सुरेश से कहते हैं,क्या तुम्हें यह बताना पड़ेगा कि मैंने तुम्हें किस तरह पाला है ? सुरेश बोला, ` बड़े भैया और मैं आपकी संतान है ? वह बोला ` मैं आपको पिताजी कहने का अधिकार चाहता हूँ मैं सब को यह बता देना चाहता हूँ कि जिस व्यक्ति का मैं पुत्र कहलाता हूँ वह तालाब में अकस्मात नहीं डूब गया था । डूबने के लिए विवश कर दिया गया था । मैं उसका पुत्र नहीं हूँ । मैं उसे नहीं पहचानता, मैं आपका पुत्र हूँ ।`[३४] मैं सत्य जानना चाहता हूँ । ताऊजी क्रोधित होकर बोले, अपने भाई की तरह तू भी चला जा । वह चला गया । और ताऊजी नाली के पास गिर पड़े और उसमें उस का अन्त हो गया ।

माँ पत्थर की तरह बैठी है और ताईजी रो रही है । मेरे कानों में कुछ आवाज आई जो मेरी चाची की थी । वह कह रहीथी जेठजी के मरने का दु:ख तो इसे हुआ है । दूसरी बोली ` जेठजी इसी को तो मानते थे । तीसरी ने कहा ,` सच बहना,जेठ के साथ तो यही राज करतीथी । यही देखकर तो इसके मालिक ने तालाब में डूब कर जान दे दी थी । उड़ा दिया कि पैर फिसला गया । इसी कारण दिनेश लन्दन चला गया,सुरेश माँ से पूछता है कि दिनेश भैया और मैं

उस पिता की सन्तान नहीं है जो तालाब में मरे है ।यह क्यों नहीं कहती कि तुम उसकी पत्नी नहीं हो ? वह सुन कर क्रोधित होती है । सुरेश लन्दन चला जाता है ।

इस कहानी में पारिवारिक समस्या का चित्रण है और विवाहोत्तर प्रेम का दर्शन भी है । पति होने के बाद भी अपने देवर से प्रेम करना यह नीति के विरुध्द है यह जानकर पति खुद आत्महत्या करता है। देवर बच्चों को पालते हैं परंतु उनको अपने बेटे मानने को तैयार नहीं हो जाते और इसी में उनका अन्त हो जाता है । पति अपने पत्नी का कुकर्म देखकर स्वयं जान देता है और इस जंजाल से मुक्त हो जाता है ।

२८) बेमाता --

उजली और बिंदरावन पति-पत्नी है । उनको दो बेटे हैं बडा बाबू है और बहूँ मास्टरनी । छोटा ठेकेदार है । वे जात के कुम्हार है पर उसके ससुर तक ने कभी बर्तन नहीं बनाए । उजली खिलौने बनाती थी पर वह भी बाद में बंद हो गया । बिंदरावन को पीने की आदत है । बडा लडका जगदीश बी.ए. करके नौकरी करने लगा । उसकी पत्नी भी पढी-लिखी होने के कारण नौकरी करती है । छोटा लडका कन्हैया शादी के बाद कुछ दिनों में माँ-बाप से अलग रहने लगा । जगदीश भी अपनी पत्नी और बेटे के साथ अलग रहने लगा । तब उजली व्यस्त होकर फिरसे खिलौने बनाने लगी ।

गाँव में त्योहार होने के कारण बेटे बहुएँ,आई थी । वे उजली की कला की तारीफ करते हुए सरस्वती ने कहा" अम्मा हम को भी बना कर दो" उजली ने हंस कर कहा` अरी,तुम-को तो तुम्हारे प्यारे में कभी के बनाकर दे चुकी" ३५ बहुए शर्मीदा होकर अन्दर चली गयी । बिंदरावन बोले,` पर भाई,इन्हे भी लेने खरीदार आ पहुँचा है । पैकिंग में रखते समय उस आदमी के हाँथ से बबुआ नीचे गिर कर चूर हो गया । उजली ने देखा और पाँचों भी बबुओं को उठाकर पटक दिये । फिर दृढ स्वर में कहा" टूट गये तो टूट जाने दो,मैंने ही तो बनाए थे, और बना लूँगी । दस दिन बाद आकर ले जाना, भाई ।"३६

` बेमाता` इस कहानी में नयी और पुरानी पीढी का संघर्ष है। हर माता-पिता अपने पुत्र को अपनेसे अलग रखना नहींचाहते। परंतु कुछ कारण वश अगर ऐसा हो ही गया तो इसका दु:ख माँ को बहुत होता है। माँ का दर्द एक माँ ही जान सकती है। माँ बच्चे होकर भी बेमाता की तरह रह जाती है। उसको अपना कहने वाला कोई उसके पास नहीं रहता। इससे बडा और कौन-सा दु:ख माँ को हो सकता है। माता-पिता और पुत्र के संघर्ष में हमेशा पुत्र की ही विजय होती है, क्योंकि पुत्र आधुनिक युग का प्रतिनिधि होता है। उसके सुख के लिए माता-पिता अपने विचारों को सिध्दान्तो को बदलने के लिए तैयार होते हैं। विष्णु प्रभाकर जी ने अनादि काल से चले आये इस परंपरा को अपनी कहानियों में अभीव्यक्त किया है।

२९) राजम्मा --

राजम्मा को सामने पाकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा नारायणन कहा है ? वह बोली, वे दौरे पर गए हैं। वह आकर मेरे पास बैठी थी। वह उठकर रसोई में कॉफी बनाने गयी। परदृष्टि मिलते ही मैंने पूछा` क्या बात है, भाभी ? वह अपने पैर का घाव दिखाती है। तुमने दवा क्यों नहीं लगाई ? रूको मैं अभी देखता हूँ घर में क्या है। न हो तो बाजार जाकर मरहम ले आता हूँ। तुम तब कॉफी तैयार करो।" मैं उठा इतने में वह बोली,` न - न , साधारण-सी चोट है,ठीक हो जाएगी। असली चोट तो मन की है। उस पर कौन-सा मरहम लगा सकता है, अलबता यह बात विचारणीय हो सकती है।" मैं न जाने उससे कितनी दूर निकल आया। शांति वन के लॉन में ही मैंने साँस ली। भूल गया घाव, भूल गया दवा,बस मेरे तन-मन को राजम्मा की मुक्त हंसी ने जकड लिया। मैं उसके और अपने बारे में सोचने लगा। उनके शादी के बाद उसके घर में जो अनुभव लिया वह याद आने लगा।

एक दिन मैंने पाया कि नारायणन उदास है। क्योंकि राजम्मा अकसर बहुत जोर से हँसती है। वह बोला` मित्र,मैं सचमुच उसे प्यार करता हूँ। मैं उसे खोना नहीं चाहता। मैं बात करूँगा तो शायद कोई गलत फहमी पैदा हो जाए।" मैंने नारायणन से कहा,` देखो भाई,यह तुम दोनों का मामला है। मुझे बीच में

क्यों डालते हो ? नारायणन ने कोई उत्तर नहीं दिया । बहुत दिनों के बाद वह आज आयी है । और मैं उससे भाग कर यहाँ आया हूँ । घड़ी देखी तो ग्यारह बजने वाले थे । आठ बजे मैं घर से चला था । घर जाकर देखा तो एक कागज मिला - लिखा था -' मेरे प्रिय राजगोपाल । आखिर तुम नारायणन के दोस्तही तो हो । मुझसे भागना चाहते हो ? लेकिन भाग सकोगे ? तीन घण्टे राह देखकर जा रही हूँ । अब साहस हो तो यह अपने मित्र को दिखा देना । मैं तुमसे प्यार करती हूँ, यह सच है । तुम्हारी राजम्मा' मैंने अनुभव किया कि सचमुच मैं उसके प्यार में आकण्ठ डूबा हुआ हूँ ।

इस कहानी में एक स्त्री पति के होते हुए भी उसके मित्र से प्रेम करती है परंतु वह मित्र सच्चा मित्र होने के कारण यह स्वीकार नहीं करता । वह उन्हें बार-बार समझाने की चेष्टा करता है । और उससे भाग जाता है । परंतु वह उससे अन्त तक प्यार करती है ।

३०) <u>फासिल इन्सान और</u> .....

विनोद शंकर को नींद में रात के चित्र दिखाई देते हैं । रात नवकला निकेतन में उसका सम्मान हुआ था । उसके अभिनय कला के सभी चित्र प्रदर्शित किए गए थे । बहुतसे नाटकों में उसने अभिनय किया था । लोग उसके अभिनय की प्रशंसा करते ।अभिनय करते समय वह भावाकुल हो गया और बाद में क्या हुआ और घर कैसे पहुँचा उसे पत्ता तक नहीं । द्वार खोलकर उसकी पत्नी सरला आई और बोली, बेटे,बहू बेटियाँ,दामाद सभी आ गए हैं और तुम्हारी तारीफ कर रहे हैं । वे बोले, मेरी तबीयत ठीक नहीं है । तो सुधीरा के पति को बुलाती हूँ । मुझे डॉक्टर की जरूरत नही है ।" ये लोग क्या समझेंगे मेरे दर्द को,कल के छोकरे" इतने में छोटा लड़का भवभूति और बहू रागिनी आते हैं । वे दोनों पापा के बारे में प्रशंसा करते हैं । भवभूति ने कहा ' हाँ पापा,यह रागिनी डॉक्टरेट के लिए 'थीसिस' लिख रही है । विषय है,' हिन्दी रंगमंच का विकास' " और पापा । रात वह विकास मेरे सामने मूर्त हो उठा । व्यर्थ ही लोग कहते हैं कि हमारे यहाँ रंगमंच और अभिनय की परंपरा नहीं है ।" [३८]

सरला चाय को सभी को बुलाती है । रागिनी बोली' मम्मी में जो काम

एक वर्ष में न कर पाती, वह पापा ने कुछ क्षणों में करवा दिया है।" उनका उत्साह नष्ट हो जाता है। उन्होंने सुना मक्मूति कह रहा है। पापा तो अब म्युजियम की वस्तु है। पर आज इस रागिनी ने उन्हें जगा दिया।" ३९

रागिनी बोली,' म्युजियम ज्ञान का भंडार होता है। वहाँ से जो ज्ञान प्राप्त होता है वही तो सर्वोत्तम है। मेरी थीसिस में प्राण पड गए है।" विनोद - शेकर न आने के कारण सरला आती है तब वे कहते हैं मोती-सीप के गर्भ से जन्म लेते हैं परन्तु ... जाने दो हम इन्सान हैं, केवल हाड-मांस के पुतले नही। तुम चाय यहीं भेज दो।" ४०

इस कहानी में एक कलाकार का चित्रण है। इसमें पारिवारिक समस्या को स्पष्ट किया है। अपने पिता के प्रति आज के युवकों का यह गलत दृष्टिकोण है कि वे अब म्यूजियम की वस्तु है। म्यूजियम में निर्जीव वस्तु रखी जाती है। माँ-बाप या घर के अन्य व्यक्ति घर की शोभा हैं, दिखावे के लिए नहीं।

३१) ढोलक पर थाप --

द्वार की घण्टी बजाने पर मिसेज चावला बाहर आयी। उन्होंने हैलो करके मेरा स्वागत किया। बोली मैंने ढोलक के गीत सुनने के लिए एक घरेलू पार्टी का आयोजन किया है। पार्टी के लिए मिस्टर टी.एन.माथुर और मिसेज माथुर, मिस्टर और मिसेज थापर और मिस्टर गुप्ता,मिस्टर और मिसेज खन्ना आदि आते हैं। चावला ने सबको स्कॉच का गिलास दिया। मृदुला माथुर मेरे पास बैठी थी। वह बोली,मिस्टर सुशील वर्मा, आपका' कुवारी घाटी' नाटक मैंने देखा था। सच इट वाज ए हिट। मृदुला भी एक कलाकार है।

मि.गुप्ता ने मि.थापर को स्कॉच का एक गिलास दिया और दूसरा मिसेज थापर की ओर बढाया पर वह दो कदम पीछे हटी। न जाने कैसे गुप्ताने उसके हाथ को ट्विस्ट किया तब होंठ खुले और शराब गले से नीचे उतर गई। लोग हँस कर तालीयाँ बजाने लगे। मृदुला ने ढोलक पर थाप दी। सभी लोग खन्ना की मर- - सीडीज देखने गये हैं। मिसेज खन्ना सुशील से बोली,' एक नाटक मेरे लिए लिखो

ना । वह मुझे लॉन्ज में ले गई । मुझसे वह सटकर बैठी और बोली` नाटक के बारे में चर्चा करने के लिए मेरे घर आओ ना । खन्ना तो आजकल फूड मिनिस्ट्री में हैं । अकसर रात को देर से लौटते हैं और मैं अकेली बोर होती रहती हूँ ।"[४१] इतने में मि.गुप्ता और मृदुला कब से आ खडे थे । गुप्ताने कहा,` दो कलाकारों के इस मधुर मिलन के लिए...." सभी खाना खाने में मशगूल थे । और दूरसे ढोलक का गीत सुनाई देता है । माथुर खन्ना की ओर गये और मैं उस शोर में एक बार फिर अकेला खडा रह गया ।

` ढोलक पर थाप` इस कहानी में हाय सोसायटी का चित्रण और पाश्चात्य विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते हुए भी अपने देश के बारे में प्यार दिखाई देता है। ढोलक के गीत तो सभी को प्रिय लगता है ।

३२) बस,इतना भर ही --

अरूण एक सम्पादक था । अरूण पर मैं बहुत प्यार करतीथी । मेरे तीनों बच्चें अरूण के उसी उद्दाम प्यार के प्रतीक है । मैंने सुना था कि अरूण के एक मित्र की पत्नी मधुरिमा मुझसे अधिक सुन्दर है । अरूण उसको चाहता है पर मैंने उसे कभी नहीं पूछा । सोलह वर्ष पूर्व मैं युवती थी और मेरे पास रूप,सौन्दर्य था । अरूण पागल था मेरे उस रूप का । मेरी शादी हो गई मैं बहुत खुश थी पर कुछ दिनों के बाद मधुरिमा के कारण झगडा होने लगा । मैंने कहा," विश्वास करो अरूण,हमारे बीच में जो प्यार है,वही सच है । उस सच कोमिथ्या मत होने दो ।[४२] अरूण चला गया । मैंने दीदी से कहा तब वह बोली,` इला,अपने और उसके बीच में किसी को मत आने दो । यह तुम्हारे प्रेम का अपमान है ।` अरूणने कहा,तुम अनिरुध्द से प्यार करती हो । मैं पागल हो उठी पर वह चला ही गया ।

अनिरुध्द अरूण का मित्र है । अब दीदी के बाद वही मेरा अपना था । उसने इस मुसीबत में मुझे सहायता करने के अतिरिक्त कुछ भी तो नहींकिया । अरूण ने तलाक का मुकदमा दायर करके मुझपर दुराचार का दोष लगाया । अनिरुध्द का अब आना भी बढता जा रहा था । और कुछ दिनों में ही हम दोनों एक-दूसरे के हो गए । अनिरुध्द उस दिन कॉलेज से सीधा मेरे पास चला आया था ।

अब उसने इसे अपना अधिकार मान लिया था । मैंने कहा मुझे तुमसे अपने मन की बात कहनी है ।कही,मैं सुनता हूँ। मैंने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए वही घटना सुनाई । वह बोला तुम मेरे पास लौट आयी हो । नहीं लौटती तो यह सब कहतीं कैसे ? बस,इतना ही मर मेरा है । इससे अधिक कुछ माँगने को है,मैं नहीं जानता ।" सुनकर मुझे लगा कि इस क्षण तो ऐसा ही लगता है । बस,इतना मर ही मेरा है ।

इस कहानी में विवाहपूर्व तथा विवाहोत्तर प्रेम का चित्रण है ।कुछ पुरुषों को पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों का आकर्षण रहता है । और इस आकर्षण में वह अपने सर्वस्व को नष्ट करता है । हर व्यक्ति स्त्रियों के सौन्दर्य पर अपना सब कुछ कुर्बान कर देता है परंतु यह क्षणिक सौन्दर्य नष्ट होने के बाद वह फिरसे नये सौन्दर्य की ओर खींचे जाते हैं । मानवी स्वभाव ही ऐसा है कि सौन्दर्य के पीछे-पीछे भागना । लेकिन यह एकजिंदगी में धोखा है । जिससे वह बच नहीं पाता ।

३३) एक अनचीन्हा इरादा --

बहुत देर तक वह घूमता रहा । उसके सामने अपनी माँ का आँसुओं से भरा चेहरा उभरता और सिर से खून कपडों पर गिर रहा है,माँ,पिता,भाई-बहन सभी चीख रहे हैं। वह यह नहीं जानता कि उसके माँ-बाप आपस में क्यों लडते हैं । आज हद हो गई उस झगडे की । पिताने एक लकडी माँ के सिर पर दे मारी । माँ सदा की तरह गालियाँ बकने लगी । उसे ऐसा लगता है कि उसका पिता आदमी न होकर एक बडा खूँखवार जानवर है । यह देखकर उसके अन्तर में एक भयानक अनचीन्हा इरादा उभरता है । और वह वहाँ से भाग जाता है । वह इन सभी से बचना चाहता है परंतु बच नहीं सकता । वह घूमता है और एक भवन के कोने में लेटने की कोशिश करता है । लेकिन सामने सिनेमाघर का इश्तिहार लगा है । एक खूबसूरत औरत और मर्द एक दूसरे से बडे प्यार से देख रहे हैं। वह सोचता,है " अगर ये दोनों जिन्दा हो जाय तो आगे क्या हो ? ये दोनों उसके माँ-बाप जैसे क्यों नहीं ? उसके माँ-बाप इन जैसे क्यों नहीं ?"[४३] उसे वह झगडे का दृश्य याद

आता है। वह अपने घर की ओर आता है परंतु दरवाजा बंद देखकर उसकी दृष्टि एक कोने पर गयी जहाँ उसके माँ-बाप चारपाई पर लेटे हैं। माँ जाग रही है और पिता गहरी नींद में है।

माँ के सिर पर बँधी सफेद पट्टी देखकर उसका सिर घूमने लगा और वह कूद पड़ा। उसके पड़ोस के बच्चे उसे देखकर हँस रहे हैं। वह क्रोधित होकर उन बच्चों को पीटने लगता है। उनके माँ-बाप भागते हुए आते हैं। उन्हें छुड़ाते हैं तो उनको दाँत से काट लेता है। वे गाली देते हैं। माँ उसे पीटने लगती है। वह माँ के हाथ में दाँत गड़ा देता है परंतु उसे लगता है वे दाँत उसके अपने बदन में गड़े जा रहे हैं।

इस कहानी में पारिवारिक समस्या का चित्रण है। सिनेमा का इश्तिहार देख कर उसे अपने माँ-बाप की याद आती है क्योंकि वह हर समय झगड़ा करते हैं परंतु यह दो प्रेमी कितने आनंदी दिखाई देते हैं। ऐसे मेरे माँ-बाप क्यों नहीं रहते। यही सभी उसे एक अनचीन्हा इरादा जैसा लगता है।

३४) <u>भोगा हुआ यथार्थ</u> --

वृध्द पारसनाथ चिकित्सा केन्द्र से घर लौटे थे। अरविंद ने कहा, सुदेश और विमा को आप नहीं मिलेंगे। पारसनाथ बोले, " मैं किसी-से नहीं मिलना चाहता। वह हरामजादा मेरी दौलत का भूखा है। और विमा बड़ी बेवकूफ लड़की है। वह उसके किसी काम में दखल नहीं देगी। वह मेरी सारी दौलत को सुदेश के द्वारा ही पाना चाहती है। शायद वह मुझसे डरती है क्योंकि मैंने उसे एक पागल युवक के जाल में फँसने से बचाया था।"[४४] पारसनाथ कमरे की सब खिड़कियाँ, दरवाजे बन्द करके सो जाते हैं। एका-एक एक अर्ध्द-विक्षिप्त अधेड़ मूर्ति कमरे के बीच में खड़ी हो गई। उस मूर्ति ने कहा, मैं निरंजन हूँ - तेरा माँ-जाया बड़ा भाई। तुमने जायदाद के लिए मुझे बीमारी में गलत दवाइयाँ देकर मेरा दिमाग खराब कर दिया और मुझे पागल खाने भेज दिया। परंतु मैं वहाँ से निकल आया और तुझसे दूर रहने लगा। तू मुझे जहर देने में एक दिन सफल हो गया। पर

मैंने अपनी संपतिका मालिक तुम्हें नहीं बनने दिया । बाद में एक नारी स्वर सुनाई देता है जो उनकी पत्नी का है । वह बोली आपने मेरे जीवन का बीमा कराया था । आप मुझे हरिद्वार मेले में छोड आये और यहा कहा कि मै गंगा की धारा में बह गई हूँ । और बाद में बीमे के पैसे वसूल करने का प्रयत्न करने लगे । पर मैं एक साल बाद वापस लौटी तब आपने खुशीसे बीमा कम्पनी को लिखकर दावा वापस लिया । पर बीस वर्ष के बाद आपके प्रयत्न बेकार होने के कारण मैंने स्वयं आत्महत्या कर ली ।

फिर उनकी बेटी शुभा आती है । वह बोली पिताजी आपको मेरा प्यार मंजूर न होने के कारण आपने मुझे जहर पिलाया था । सभी दरवाजे पर एक एक मूर्ति खडी है । पारसनाथ, का दम घुटने लगता है । सवेरे विमा, सुदेश और अरविंद ने आकर देखा पारसनाथ कागजों को कस कर लेटे हैं। देखकर अरविंद ने कहा अब रात हो जाओ बाबू तो चले गए है । अकेली विमा बाबू के लाश के पास बैठ कर रोने लगी । लोग देखकर कहते थे,' भगवान ऐसी शानदार मौत सब को दे ।'

इस कहानी में पारिवारिक समस्या का चित्रण है । साथ ही साथ इस कहानी में धन को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अपने पारिवारिक लोगों का भी बली चढाते हैं । उसे सम्पत्ति के आगे और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं दिखाई देता । धन उसका सर्वस्व है और उसे पाने के लिए वह कुछ भी कर सकता है इसका इस कहानी में चित्रण है । उस लोभी का अन्त भी उसी तरह ही होता है यही भी दिखाया है ।

३५) <u>राग और अनुराग</u> --

सतीश और उसकी पत्नी सन्ध्या दिल्ली में रहते हैं । सतीश की माँ मरने के बाद उसे पिताजी ने ही बडा करके पढा या था । वे दोनों भी पिताजी का बहुत आदर करते है । वह एक दिन पिताजी को गांव से दिल्ली में बुलाता है और वे भी आते हैं । दिल्ली में उनका कमरा छोटा है फिर भी वे सभी उसमें रहते हैं । सन्ध्या भी पिताजी का आदर करती है । पिताजी बहूँ को और बेटे को अच्छे अच्छे उपदेश देते रहते हैं ।

एक दिन वे गाँव जाने के लिए निकले । सतीश को पढाने के लिए जाना था इसीलिए वह स्टेशन न जा सका । उसका मन वहाँ न लगने के कारण जल्दी घर आता है और संध्या को अपने बाहों में लेता है । तभी संध्या को खिडकी से बरामदे में एक व्यक्ति दिखाई देता है और यही सतीश भी देखता है परंतु अँधेरा होने के कारण ठीक नहीं दिखाई देता । सतीश सुबह देर से उठता है । वह सन्ध्या से कहता है," याद आता है ,रात कोई यहाँ सो रहा था ।"[४५] वह बोली मुझे भी याद आता है । वे दोनों एक दूसरे को देखकर अपराधी महसूस करते हैं । तभी पडोस के मधुसूदन बाबू आकर बोले तुम्हारे पिताजी मुझे मिले थे । और वे गाडी लेट होने के कारण यहाँ लौट आए थे । सवेरे ही तो गए हैं। तुम्हें कष्ट होगा, यह सोचकर बरामदे में ही लेट गए थे । कहा है कुछ खयाल न करे ।"

इस कहानी में पिता-पुत्र का प्रेम चित्रित हैं । महानगरीय जीवन में रहने के लिए किन-किन समस्याओंका सामना करना पडता है यही दिखाई देता है । पुत्र और बहू पिताजी से बहुत प्यार करते है । वे अपने पिताजी को अपने से दूर रखना नहीं चाहते । परंतु पिताजी काफी समझदार है वे उनकी कटीनाई को समझाकर गाँव जाने की तैयारी करते है और अन्त में गाँव चले जाते है ।

३६) सलीब --

प्रमोद सक्सेना रेल विभाग में काम करते हैं । उनकी पत्नी कीर्ति ने उन्होंने लिखा हुआ श्रीमां का पत्र पढा । जिसमें भ्रष्टाचार के बारे में लिखा था और उनको रोकने के उपाय भी सुझाए थे । वे पढकर प्रसन्न हुए और उनके ` भ्रष्टाचार निरोधक दल ` में मुझे एक पद देने का निर्णय किया है । सक्सेना अपने पत्नी से कहते है कि हमारे डिवीजनल सुपरिन्टेन्डेंट श्री दुर्गा प्रसाद वोहरा मुझ पर बहुत प्रसन्न है । पत्नी कहती है कि नहीं,नहीं मुझे डर लगता है । हमें फिर भूखों मरना पडेगा । वे बोले मैं किसी लालच के वश होकर तो ऐसा नहीं कर-रहा, कर्तव्य समझकर कर रहा हूँ ।

एक दिन वोहरा साहब बताते हैं कि उनके पत्र पर क्या क्या प्रतिक्रिया हुई है । तब कीर्ति को लगता है कि सभी मेरे पति को खतरनाक व्यक्ति समझ रहे

है । प्रतिक्षण यह रिश्वत ली जाती है । एक दिन एक संसद सदस्य ने आरोप लगाया कि मेरे पत्र के कागज की गाड़ियों को स्थानांतरित करके अब वापस लाने के लिए पैसे माँग रहे हैं । बड़े साहब ने जवाब माँगने से उन्होंने कहा, मैंने रिश्वत माँगी नहीं थी उन्होंने दी थी और मैंने और साथियों ने ली थी । मैंने उनसे कहा था ।" इसे आप अच्छा व्यवहार कहते हैं , हम सब मिल कर रेल विभाग को लूट रहे हैं। हम सब चोर हैं ।"[४६] उसकी शिकायत के कारण विभागाध्यक्ष ने प्रमोद सक्सेना को तुरंत निलंबित कर दिया । सक्सेना कहते हैं कि अगर मैं न बताता तो रेलवे की आय के बन्द द्वार नहीं खुलते । जो सत्य के मार्ग पर चलता है वह दु:ख भोगता है और जो असत्य का मार्ग अपनाता है वह सुखी होता है । परंतु आज निर्णय होकर सत्य की विजय हो गई है और वे दोनों भी आनंदी हो गए हैं ।

इस कहानी में भ्रष्टाचार और रिश्वत का चित्रण है । सरकारी ऑफिसों में किस तरह भ्रष्टाचार चलता है और उस पर किस तरह निर्णय लिया जाता है इस को स्पष्ट, दिखाया है । रिश्वत लेने का काम कुछ लोग नहीं करते परंतु उनको किस तरह फँसा कर रिश्वत लेने को तैयार करते हैं ये लोग और बाद में उनको ही इस जाल में फँसाने का कार्य करते हैं ।

३७) <u>अँधेरे आँगन वाला मकान</u> --

इस कहानी में दो वृध्द दम्पति का चित्रण है । दीप्ति की सहेली मंजुला उसे एक दिन अपने घर पर आने के लिए कहती है । इसी के अनुसार दीप्ति अपने पति माधव के साथ उसके घर जाती है । उन दोनों ने अपना परिचय करवा दिया । दिप्ति ने पूछ लिया," मंजुला नहीं है क्या ?" वृध्दाने उत्तर दिया," मंजुला क्या यहाँ रहती है, बेटी । लन्दन से उसके भाई-भाभी आए थे । दो दिन यहाँ रहे,चले गए । वह भी दो दिन रही,फिर चली गई । तुम तो जानती ही हो गी, लड़कियों के होस्टल में रहती है वह ।"[४७] माताजी उन्हें चाय कॉफी जो भी चाहे वही बनाकर देती है । उस अँधेरे आँगन वाले मकान में कबूतर,कॉक्रोच,छिपकली आदि रहते हैं । माताजी परिवार के बारे में बताती है - तीन बेटे और दो बेटियाँ हैं । सभी बाहर रहते है । यह देश तो इन्हें अच्छा लगताही नहीं । मंजुला सबसे

छोटी है । दु:ख तो एक ही बात का है, उसने शादी नहीं की ।

गृहस्वामी बोले बच्चों के बारे में तो सुन ही लिया होगा । सब ऊँचे ऊँचे पदों पर हैं । बस, हम दोनों यहाँ रहते हैं । दीप्ति और माधव वहाँ से निकलते है । तब मांजी बोली " फिर आना, बेटी । और ये फल बच्चों के लिए हैं । मंजुला तो मिलेगी ही । उसे भी खिलाना । वह अपने आप तो कुछ खाती नहीं । तुम्हारी बात तो सुनती होगी । शादी के लिए समझा देखना । अकेली कैसे जिएगी ....[४८] " वे दोनों चले जाते है । एकाएक दीप्ति ने कहा, " जानते हो मुझे क्या लग रहा है ? " तुम्हें लग रहा है कि जैसे एक दिन उन दोनों के स्थान पर हम भी हो सकते हैं और क्रौंक्रोच ... "[४९]

इस कहानी में सामाजिक समस्या का चित्रण मिलता है । आमतौर पर मनुष्य के जीवन में वृध्दावस्था आती ही है । इस अवस्था में उसे किसी न किसी के सहारे की जरूरत होती है । अत: वे इस कारण वश अपने बच्चों से प्यार करते है । वे ही बच्चें घर छोड कर कही बाहर जा बसते है । वे अपने घर पर एक मेहमान की तरह आते है और चले जाते है । ऐसे ही एक वृध्द दम्पति का चित्रण इस कहानी के अन्तर्गत मिलता है ।

३८) <u>सत्य को जीने की राह</u> --

सुरजीत सिंह की बेटी संदीप खन्ना को मैगजीन माँगने के लिए आती है । विनय बत्रा से संदीप खन्ना सुरजीत सिंह के परिवार के बारे में कहते हैं, जिस समय उस पागल भीड ने मेरे मकान पर आक्रमण किया उस समय मुझे सन १९४७ की घटना याद आई । सब पागल लोग कोलाहल करते रहे । तब हम पडोसी थे । हम देखते हैं कि दिल्ली महानगर की बस्तियाँ जल कर राख हो रही है । वहाँ हम पहुँचे तो वहाँ एक सत्रह-अठारह वर्ष की यौवना को छोडकर कोई नहीं बचा था । हमने उसे दबोच कर जख्मी किया और कीमती सामान बटोरने लगे । उसमें एक गहनों का बक्स मिला । सुरजीतने उस लडकी को होश में आते देख उसका सीना चीर दिया था और उसकी शक्ति समाप्त हो गयी पर समाप्त नहीं हुई हमारी जानवर होने की क्षमता ।

घर पर आकर सुरजीत की बेटी को देखकर वे चौंक पडे । क्योंकि वह मुस्लिम युवती भी वैसी ही थी । वह लडकी आकर चली जाती है । वह अपने आप को दोषी समजता है । विनय बत्रा स्तब्ध थे । वे कहते हैं, निरंतर समीकरण और लक्ष्य भी बदलेंगे लेकिन आदमी के भीतर सोया राक्षास इसी प्रकार जागता रहेगा अपनी भूख मिटाने को नये नये मुखौटे लगाकर । बत्रा ने कहा" कितनी प्रगति कर चुके हैं हम । कितने अद्भुत आविष्कार किये हमने, पर इस सत्य को जीने की राह आज तक नहीं खोज पाये,शायद खोजना चाहा ही नही...." [५०]

इस कहानी में आर्थिक समस्या और नारी के सौन्दर्य की लालसा का चित्रण है । मनुष्य धन के लिए किसी की जान तक लेता है इसमें उसका मनुष्यत्व दिखाई देता है । मनुष्य धन का लोभी है वह धनकी ओर आकर्षित होता है । उसी तरह सौन्दर्य की ओर भी । उन दोनों को पाने के लिए वह कुछ भी करने के लिए राजी होता है । उसमें साहस न हो तो भी वह धन की लालसा से साहस निर्माण करता है । इसमें सुरजीत सिंह अन्याय और अत्याचार का प्रतीक दिखाई देता है ।

३९) एक और कुन्ती --

यह एक पत्र द्वारा लिखी गई कहानी है । मैं एक सुसंस्कृत परिवार की बहू और बेटी थी । अचानक एक दिन हमारे घर पर आक्रमण हुआ तब अन्य घर के लोग शरणार्थी होकर शिबिर में गये थे । मेरे पति के साथ मुकाबला करके उन्हें मारकर बलात्कार किया मेरे साथ । जब होश आया तो मेरे सामने एक व्यक्ति खडा था । वह कहता है मेरा नाम नूर है । वह मुझे आयशा बनाकर नकाब पहनाकर अपने घर ले गया । क्योंकि मैं नारी और सुन्दर थी । और एक बात बताऊं नूर अविवाहित और हिंदू था । कई दिन बाद पता लगा था मुझे वह अपनी जमीन जायदाद बचाने के लिए मुसलमान बना था ।" [५१] मैं एक दिन माँ बनी उस अत्याचार का वह नतीजा था । पर ७: माह बाद फिर मैं नूर के बच्चे की माँ बनी ।

गुंडोंने नूर को मारने के बाद मेरे जीवन में प्रोफेसर फारुखी आया और फिर मुझे जीवनदान मिला । हर औरत के अन्तर में एक मर्द रहता है ।फारुखी ने

मेरा नाम सुरैया रखा । चौथा पुरुष था वह मेरे जीवन में । इन्द्र भी कुत्ती का चौथा पुरुष था । मैं चौथी बार माँ बनी । एक दिन दुश्मनों ने फारूखी को दूर कालेज में बदल दिया और वह मुझे छोड़कर चला गया । तीसरे दिन एक पंजाबी युवक मुजफ्फर मुझे अपने गाँव ले गया और फिर वहीं हो गया । इस समय दो जुड़वा बच्चों की माँ मैं हो गई । मेरे पाँच बेटे थे और कुन्ती के भी पाँच माने हैं , छटे को उसने स्वयं त्याग दिया था पर मेरा छटा मुझसे छीन लिया गया था । परंतु कुरुक्षेत्र का युध्द अभी पूरा नहीं हुआ था । वहाँ से भी मुझे जाना पड़ता है । हर बार नियति ने मुझसे छल किया । मैं तीन बरस कहाँ से कहाँ भटकी अपने पाँच बच्चों के साथ । एक दिन अनवर को पहचानकर हिन्दुस्तान के लोग उनके पास आऐ और सुरैया के वेश में प्रतिमा को पहचान लिया । फिर मैं प्रतिमा बन गयी थी और मेरे पाँचों बेटों के नाम भी बदल गए थे ।

वहाँ से मैं एक पहाड़ी गाँव में गई । वहाँ बेटों के लिए स्कूल में अपना ही नाम लिखा दिया । मातृत्व को नारी का चरम सौन्दर्य माना है । वह मुझे मुक्त कण्ठ से मिला है । एक दिन मेरा पहला बेटा मुझे मिलता है पर उसके बाद वह नहीं मिलता । यह पत्र पूरा हो जाता है ।

आपकी

प्रतिमा ऊर्फ आयशा ऊर्फ सुरैया ऊर्फ

प्रतिमा ।

इस कहानी में आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का चित्रण है । नारी की पीडा का भी चित्रण दिखाई देता है । इसमें नारी को गौण स्थान दिया है । हर व्यक्ति नारी के सौन्दर्य का पान करना चाहता है । वह उसे अपनी वासना का शिकार बनाता रहता है । उसकी दृष्टि से नारी केवल उपभोग्य वस्तु है । नारी की अपना पेट पालने के लिए हर मूसीबत का सामना करना पड़ता है फिर भी उसकी उसमें हार ही होती रहती है ।

४०) तूफान --

उतरा खण्ड के मार्ग पर गगन चुंबी हिम-शिखरों की तलहटी में छोटी सी बस्ती है जहाँ वर्ष में एक बार यात्रा होती है। वहा दूकानदार लोगों को तूफान आने का भय दिखाकर माल बेचते हैं। संध्या के समय एक वृध्दा और युवती रश्मि वहाँ आते हैं। वृध्दा वहाँ लेटने को आतुर है पर रश्मि नहीं क्योंकि उस कमरे में एक बीमार आदमी है। जिसका नाम अजित है और उसका भाई गोपाल है। तूफान आता है और बारीश भी। गोपाल अजित की कराह सुनकर सिताबसिंह को पुकारता है पर वहाँ एक नारी का मधुर स्वर सुनाई देता है। वह उसे कहता है, मेरे भाई की हालत अच्छी नहीं है। वह भीगी देख,उसे धोती देता है और पहचानता है।` तुम - तुम वही हो... हाँ,वही जो संध्या को यहाँ से भाग खडी हुई थी" गोपाल आक्रोश से बोला तुम चली जाओ। पर वह नहीं जाती। वे दोनों अजित को सहलाते हैं। बाहर तूफान था और भीतर सब कुछ मौन था। गोपाल ने पूछा ` तुम लौट कर क्यों आयी ? रश्मि बोली` बडी अभागिन हूँ। माँ ने प्रसूति में ही आँखें मूंद ली थीं। मेरी जवानी में पति साथ छोड गया। एक बेटा था जो बारह वर्ष का होते न होते चला गया। बाप के घर लौटी तो देहरी पर पाँव रखते ही उसने स्वर्ग का रास्ता पकडा ` जहाँ जाती हूँ,सर्वनाश साथ जाता है,जिसे प्यार करती हूँ वही मिट जाता है। मेरी छाया में मौतका वास है.... ।"[५२] वह जानेके लिए निकली पर न जाने कबसे गोपाल का हाथ उसके कन्धे पर कस गया था। और गोपाल ने कहा,` देखो तो कैसे सुख से सो रहा है अजित।

इस कहानी में अन्धविश्वास का स्पष्ट चित्रण है। सामाजिक कुरीतियों को और आर्थिक स्थिति को भी उभारा है। उस युवती के मन में उस बीमार आदमी के बीमारी के बारेमें भय नहीं है तो उन्होंने जो अनुभव किया है उसी कारण वहँ वैसे न हो इसीलिए वहाँ रहने के लिए तैयार नहीं होती। परंतु मजबूरी के कारण फिर वापस चली आती है। तूफान यह मनुष्य के मन में आनेवाले विचारोंका प्रतीक है। तूफान की तरह मनमें विचार उमड-घूमड आते हैं।

४१) चन्द्रलोक की यात्रा --

उपेन्द्र एक लेखक है । उसकी पत्नी विमा और दो बेटे हैं । पत्नी रुपयों की माँग करती है तब वह कहता है," कोशिश करूँगा कि एक टकसाल खोल सकूँ ।" इस व्यंग्य को विमा समझाती है । बडा बेटा इंजीनियरिंग कॉलेज में पढता है । उसे सौ रुपयों की जरूरत है और छोटा मनोज जो बीमार है,उसे दवाई लाने के भी पैसे नहीं है । बडा बेटा कहता है,पिताजी पैसा पैदा करना क्यो नहीं चाहते ? क्यों उन्होंने बार बार नौकरी छोडी ? विमा उत्तर देती है,` बेटे तुम्हारे पिता पैसे को नहीं, आदर्श को प्यार करते हैं ।` बेटा गुस्से से कहता है,` आदर्श, आदर्श, आदर्शों का युग कभी का बीत गया , यदि उन्हें यह भ्रम पालना ही था तो उन्होंने गृहस्थी क्यों जमाई ? आदर्श के लिए वे स्वयं कष्ट उठा सकते हैं, दूसरों को कष्ट उठाने के लिए विवश करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं ।"[५३]

उपेन्द्र का एक मित्र विमल उसे वह एक मित्र के बारेमें कहता है जिन्होंने अपनी पत्नी बीमार है ऐसा कहकर प्रकाशक से सौ रुपये लाये हैं । उपेन्द्र घर पर आता है तो एक मित्र उनकी राह देखता हुआ दिखाई देता है। वह उपेन्द्र से खरी-खोटी सुनाकर पचहत्तर रुपये ले जाता है । इससे विमा दु:खी होती है । वह सोता है पर विमा आने पर वह यंत्रवत उठ कर बोले," तुम चिन्ता मत करो` चन्द्र-यात्रा के लिए मैंने दो टिकटों का प्रबन्ध कर लिया है,"[५४] और वह गहरी नींद में डूब जाता है ।

इस कहानी में आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का चित्रण है । कुछ लोग झूठ बोलकर पैसे निकालते हैं तो कुछ सच जो है वही भी कहने का साहस नहीं करते । केवल अपने आदर्शों का पालन करते हैं । पत्नी सब कुछ सहती है और बेटे को भी समझाने का प्रयत्न करती है । उपेन्द्र एक लेखक होने के नाते अपने आदर्श से हटना नहीं चाहता । अपनी दुरावस्था होने पर भी आदर्श को जताने के लिए दूसरों से मदद करता है ।

४२) तिरछी पगडंडियाँ --

शतरूपा एक पंजाबी और अनाथ लड़की है । दिखने में बहुत सुन्दर है । किशोर उसकी ओर देखताही रहता है । किशोर को अभिनंदन ग्रंथ की सामग्री शतरूपा के कारण ही मिली है और उस ग्रंथ को प्रधान मंत्री से प्रशंसा भी मिली । इस ग्रंथ में मैंने देश की समूची आत्मा को इसमें अंकित करने की चेष्टा की है । उस ग्रंथ की आत्मा शतरूपा है । समारोह की थकान उतरने के लिए किशोर शतरूपा को लेकर कश्मीर चला गया ।

एक दिन वे दोनों नाव में बैठकर किनारे की ओर जा रहे थे । उनकी दृष्टि सुशील पर पड़ी । किशोर ने अनदेखा किया तो शतरूपा देखती ही रही । किशोर के रहते वह सुशील से नहीं मिल सकती । परंतु दूसरे दिन वह सुशील से मिलने जाती है । वे दोनों साहित्य की बातें करते हैं इतनेमें वहाँ किशोर आता है और शतरुपा को सुशिल के साथ देखकर चौकने का नाटक करता है । वह कहता है," राष्ट्रपति अभिनंदन ग्रंथ का संपादन सुशिल भाई करे और तुम रहो इनकी सहायिका "[५५] किशोर ने कहा सच कहता हूँ, आप और शतरूपा मिल जाएँ तो इस अभागे देश के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं ।"[५६] और चला गया पर तुरंत लौट आया । और चला गया । शतरूपा ने सुशिल से कहा" सुशिल,नारी प्रशंसा की भूखी है ।, निंदा भी वह सह सकती है,परंतु पुरुष की उदासीनता उसे घृणा से भर देती है, मैं तुमसे घृणा करती हूँ । सुना तुमने मैं तुमसे घृणा करती हूँ ।" [५७] वह किशोर के पास चली जाती है और कहती है, मैं अब कभी भी सुशिल के पास नहीं जाऊँगी । किशोर ने शतरुपाको अपने पास खींचा और वे दोनों एक हो गए ।

इस कहानी में आर्थिक,सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण है । नारी की पीडा और सौन्दर्य के साथ ही प्रेम का भी चित्रण है । पुरुष की उदासीनता का कारण नारी ही है । नारी पुरुष को सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँचाती है और सबसे नीचे भी वह ही उसे लाती है । नारी में जो शक्ति होती है वह शक्ति नर को समाज में लाती है और समाज से परे भी कर देती है। नारी सौन्दर्य के कारण अपने आप को महान समजती है ।

४३) <u>पिचका हुआ केला --</u>

गाडी रुकते ही मैंने हिमप्रदेश में पहुँचने का अनुभव किया । कारण धूप के कारण सभी जगह शांतता है । गाडी से कुछ लोग चायकी तलाश में बाहर आए हैं । तभी मेरी एक पूर्व परिचित महिलासे भेट हो गई । इतने में एक दुर्घटना अचानक घट गयी कि एक बुढिया जूते निकाल कर कोयलेवाले एक लडके के पीछे भाग रही है और गाली दे रही है । मुझतक आते ही उसने लडके को पकडा और पीटना शुरु किया । बालक चीखता रहा और सभी यात्री देखते रहे । तब एक खलासी ने उसे छुडाया । वह अपने बेंच के पास चली गयी । मिसिंह उसे गालियाँ दे रहे थे । मेरे साथ सिंह और एक लोक सभा के वयोवृध्द सदस्य और उनके दो भाँजे हम एकही कूपे में सफर कर रहे थे ।

मामा भाँजे को खाने के लिए एक एक केला देते हैं । बडेने खा लिया । छोटेने चुपकेसे बडे भाई के पीठ के नीचे रख दिया । जैसे पीठ दीवार से लगी ,वह केला पिचक गया । तब छोटा बेाला,` देखो मामा,मरा हुआ चूहा[१८] ` मामा बोले,` शैतान,रख दे इसे अब मत खाना` प्लेट फार्म पर आने से पूर्व यह सब घट चुका था । कूपे में आने के बाद मामा ने वह केला उस लडके को देने को कहा जो रो रहा हैं । यह वह औरत देखती है । गाडी चली गई घायल बालक के हाथ में कुचला हुआ केला था और शेष दोनों ललचाई दृष्टि से उसे देख रहे थे । गाडी की तेज आवाज में फिर मैं अपने अतिरिक्त किसी और की आवाज नही सुन सका पर मेरे शरीर में सिहरन पैदा होती थी ।

इस कहानी में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को स्पष्ट किया है । एक बूढी औरत एक बालक के साथ किस तरह बर्ताव करती है, इसका भी दर्शन होता है। एक अनाथ बालक की दुर्दशा का चित्रण इसमें है । जिसे खाने को नहीं मिलता वे उसे प्राप्त करने के लिए मार खाते है तो जिनके पास खाने के लिए है वे उससे खेलते हैं ।

४४) <u>चैना की पत्नी --</u>

चैना छप्पर बाँधने का काम करता था । उसकी लोकप्रियता के दो आधार

थे ईमानदारी और पत्नी । चैना की मृत्यु हो जाने के बाद उसका बेटा रामसुख वही काम करने लगता है । पर काम पूरा न होने के कारण मैंने उसे बुलाकर पूछा , काम क्यों नहीं करते ? कोई कष्ट है तुम्हें ? कोई खास बात ? वह बोला` माँ हमें छोडकर दूसरे मर्द के पास जाना चाहती है । पर मैं उसे मार डालूँगा । एक दिन माँ ने ही रामसुख को मारना चाहा पर वह बच गया और वह भाग गयी यार के साथ । रामसुख उसके मर्द को मारने का प्रयत्न करता है पर उसमें उसे गिरफ्तार कर लिया गया । सरकारी ठेके को लेकर वे मेरे संपर्क में आये थे ।

रामसुख का ठेका नये सिरे से नीलाम होता है। अर्जीदारों में जो सबसे प्रमुख है रामसुख की माँ का नया मर्द । दूसरी ओर न रामसुख ,न उसकी पत्नी । मैंने सरकारी भाषा में घोषणा की इतने में चैना की पत्नी चिलाई यह सुनकर उसके नये मर्द में और उसमें झगडा शुरु होता है । वह कहती है," मैं तेरी हूँ । इस वक्त भी तेरी हूँ, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि तू मेरे बेटे के मुँह का कोट छीन ले । मैं कही भी रहूँ ,मेरे बेटे को मुझसे कोई नहीं छीन सकेगा` मैं देख रहा था और कुछ निर्णय कर पाऊँ कि विधुत की गतिसे एक छुरा उसके कन्धे में घस गया । मुझे लगा कि जैसे मेरे हृदय की गति रुक गयी है । चारोंओर से शोर मचा और दूरसे एक स्वर कानों में गूँज रहा है -- कैसी भयानक बात है,पर कैसी स्वाभाविक ।

इस कहानी में ठेके के कारण औरत और उसके नये मर्द में झगडा होता है,इसका वर्णन है । एक औरत अपनी वासना को बुझाने के लिए पति की मृत्यु के बाद बहू,बेटे,बेटियों को छोडकर किसी दूसरे मर्द के पास भाग जाती है फिर भी उस के हृदय में अपने बेटे के प्रति प्रेम है। यह प्रेम और उसकी वासना समाज के विरुध्द है । ऐसी औरतों को आज समाज में थान नहीं है ।

४५) मंजिल —

पति-पत्नी देश को प्यार करते थे और प्यार के लिए कुर्बानी भी दे सकते थे । उसकी पत्नी स्कूल में बच्चों को पढाती है। आजादी के कारण पति को जेल जाना पडा । आजादी मिली परंतु उन्हें शांति नहीं मिली । उन्हें कोई पद

नहीं मिला इसी लिए वे मध्यमार्गी जनतंत्र दल छोडकर वामपक्षी जनतंत्र दल में गये । उन्हें वहाँ चुनाव के लिए टिकट न मिलने के कारण वे सीधे दक्षिण पंथियों के दल में पहुँचे । उस दलने उन्हें चुनाव का टिकट दिया तो उन्होंने उनकी प्रशंसा करना शुरु किया । लोगों ने व्यंग्य करना शुरु किया । दल के लिए एक हजार रुपये न देने के कारण वे अपना टिकट किसी दूसरे को देते है ।" पडोसी नारियों ने उन्हे तरह तरह के प्रश्न पूछे । एक युवती बोली , हम अपना ` अबला दल` स्थापित करके उसका प्रतिनिधि माईसाहब को चुने । पत्नी ने पूछने पर वे क्रोधित होकर बाहर चले गये ।

उन्हे किसी बूढे आदमी का स्वर सुनाई पढा जो अपने घोडे के साथ बोल रहा था । मेरे बेटे को बहादूरी के कारण अपनी जान को कुर्बान करना पडा था । सरकार के आदमी कह रहे थे पेन्शन देंगे । कहकर बूढा हंसा,` पेन्शन ! पाँच-सात रुपये । भला क्या होगा उसका ? तू और मैं ही तो हैं । दोनों अपने लायक कमा लेते हैं । और फिर तू जानता है.... बेटा हमें देखता होगा,पेन्शन ले लेंगे तो नाराज होगा । ठीक भी है । वह आजादी के लिए मरा था,पेन्शन के लिए नहीं... भूख तो सभी को लगती है ... तुझे ...मुझे क्या जादा लगती है ? "५९ वे यह सुनकर घर की ओर भाग गये । पडोसिनोंने पूछने के बाद मास्टरनी बोली, अब हम किसी दलमें नहीं जायेंगी । जिस आजादी के लिए इतने कष्ट उठाये उस की रक्षा करना भी तो हमारा फर्ज है । यह सुनकर वह जो हँसने को तैयार थी वे एक दूसरे को देखती ही रह गयी ।

इसमें आर्थिक और राजनीतिक समस्या है । आदमी पद और प्रतिष्ठा के लिए हर समय स्वयं को बदलता है । परंतु यह न मिलने के कारण वह नाराज हो जाता है । उसकी समझ में आता है कि पद और चुनाव बिना ही हम देश सेवा कर सकते हैं और वह करने लगता है । चुनाव में लोग पैसों का इस्तमाल करते हैं और चुनाव जीतते हैं इसका भी वर्णन यहीं मिलता है । पद और प्रतिष्ठा के बिना मनुष्य देश सेवा कर सकता है यही इस कहानी से सुझाना है ।

४६) चिरन्तन सत्य --

१७ अगस्त १९४२ में एस.पी. कॉंग्रेसी नेता जानकीरमण बाबू को गिरफ्तार करने आये थे, वही एस.पी.को याद है । एस.पी.से बाबू कहते हैं, गॉंव में लोग गुंडा गिरी करते फिरते हैं । एस.पी.ने कहा, उनमें पतोर का गोविंद मिश्र भी है । वो मेरे घर में डाका डालने और हत्या करने की चिंता में है । उन्हें मैंने झूठे मुकदमें में फंसाकर जेल में ठूंस दिया था । उस दिन पुलिस और लोगोंमें झगडा हो गया तभी एस.पी.ने अपनी पशुता दिखाई थी। गोविंद मिश्र ने कहा, एस.पी.साहब तुम खूनी हो । तुमने जानकी मिश्र को पैरों से रौंदकर कुचला था । वह बोले की वह जेल में मरा था । क्या तुमने उसके साथ दवा पिलाने का नाटक नहीं किया था ? एस.पी.को वह दृश्य दिखाई देता है । वे कॉंप रहे थे । इतने में एक युवक ने वहा प्रवेश किया जो उनका पुत्र पुलिस भरती का ऑर्डर ले आया था । उसे एस.पी. कहते हैं, तुम पुलिस में नहीं जा सकते क्योंकि पुलिस जुल्म करती है । युवक हंस कर बोला, पिताजी । जिसे आप जुल्म कहते हैं वह शासन है और शासन एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार का दूसरा नाम है ।६० पुत्र गया और ऑफिस में एक आगन्तुक आया बोला, आप एस.पी. है ? जी हॉं मैं अभी इधर आया हूं । एस.पी.उसे देखकर कॉंपते हैं । वह कहता है मैं जेल में था परंतु मैंने कोई विशेष अपराध नहीं किया था इसलिए छूट गया ।

मैं अभी प्रचार विभाग का काम करता हूं और उसी संबंध में बाते करने आया हूं । वह बोला,' चुनाव में हम विरोधी को कुचल देना चाहते है । एस.पी. और उनमें बाते होती है जैसे कि वे कभी एक दूसरे के शत्रु नहीं थे । एस.पी. ने अपने पुत्र जयपाल को तुरंत काम पर भेज दिया और कहा " मैं समझाता हूं तुम्हें कल ही चले जाना चाहिये ।"... कल ? " हॉं, परिस्थिति ऐसी ही है । नये चुनाव सिर पर हैं । काम दिखाने का यही एक अवसर है ।" ६१

इस कहानी में राजनीतिक समस्याओं को स्पष्ट किया है । जुल्म और भ्रष्टाचार का भी इसमें वर्णन है । पुलिस जनता पर अत्याचार किस तरह करती है यही भी स्पष्ट होता है । पुलिस का काम है जनता की सेवा करना उस पर जुल्म करना नहीं । परंतु आम तौर पर पुलिस जनता पर जुल्म ही करती है ।

४७) राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा --

परम सुन्दरी तारा न्यायालय के कटघरे में अपना लिखित बयान बढती है। मेरी जीवन धारा का मार्ग परिवर्तित हो गया और मैं हत्यारिन बन गयी। क्यों और कैसे बन गयी यह मैं आपको बताने जा रही हूँ। मैंने वीरगढ की राजमाता की हत्या जान बूझाकर की है। आप वास्तविकता और सत्य को जान लेंगे। एक दिन मैं वीरगढ के महाराज के उपवन के आनंद मवन में ठहरी थी, तब एक विचित्र घटना घटी। प्रात:काल में मैं अकेली घूम रही थी। अचानक महाराज आये और मुझे देखकर चकित हो गये। वे मुझपर प्रेम करते थे। एक दिन मैंने कहा, ' महाराज, आप मुझसे प्रेम नहीं करते। आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं वे बोले नहीं, पर मैं रो पडी। तभी उन्होंने वह बात बताई।

मैंने तुम्हें प्रात:काल में देखा था तब मैं चौक उठा था कारण मुझे लगा मानो मेरे सामने राजमाता खडी है। माँ को मैंने वही तुम्हारा चित्र दिखाया तब उसने चौक कर पूछा, किस का है यह चित्र। मैंने कहा - एक राज नर्तकी का। यह सुन कर वह काँपने लगी क्योंकि वे दोनों एक जैसे थी। मैंने बाद में तुम्हारे जीवन का पत्ता लगाया। नृत्य संगीत की तुम्हारी शिक्षिका मुन्नीबाई ने तुम्हें खरीदा था। वह मेरी माँ नहीं है यह सुनकर मैं बेहोश हो गयी तभी उन्होंने मेरे हाथ में एक पत्र दिया। उसमें लिखा था " तारा मेरी बेटी नहीं है। मैंने उसे एक गरीब क्लर्क से खरीदा था, जिसके छ: पुत्रियाँ और पाँच पुत्र थे। परंतु महाराज,भगवान के लिए आप यह रहस्य मेरे जीते जी तारा को न बताइये...."[६२] मैं आगे न पढ सकी। अन्त में लिखा था मैं राजमाता की पुत्री हूँ। महाराज बोले मैं राजपुत्र नहीं हूँ " तुम्हें जिस गरीब क्लर्क से मुन्नीबाई ने खरीदा था, उसीसे मुझे राजमाता ने खरीदा था। तुम राजपुत्री हो। मैं तुमसे विवाह करूँगा। मैं बोली ' मैं राजमातासे मिलना चाहती हूँ। वे बोले राजमाता बीमार है। मैंने नहीं सुना मैं उनसे मिली। परंतु राजमाताने मुझे पहचान कर,इन्कार किया और वह चीख कर संज्ञा हीन हो गयी मैं माँ को पुकारती ही रही। दासियाँ रोने लगी थी और सैनिक मुझे घेरते आ रहे थे। मुख्य न्यायाधीशने न्यायालय को स्थगित

करके कहा अभी देव गढ के महाराज अभियुक्त की ओर से साक्षी देंगे । सुनकर जनता का मन खिल उठा और ताराने नयन मूंद लिये ।

इस कहानी में आर्थिक और राजनीतिक समस्या मुख्यरूपसे दिखाई देती है । राजनीति में अपने कुल दीपक के रूप में पुत्र का महत्व है और पुत्र प्राप्ति के लिए और अपना कारोबार चलाने के लिए लोग कुछ भी करते हैं । यहाँ एक राजमाता अपने पुत्री को बेचकर किसी दूसरे पुत्र को खरीदती है यह दिखाई देता है । अन्त में माँ बेटी की पहचान और भेट होने के कारण माँ चकित होकर उसमें उसका अन्त हो जाता है ।

४८) भूख और कुलीनता --

सुधीर ने एक नारी के रोने का स्वर सुना और देखकर अपने मित्र प्रमोद से कहा,` कोई सुबोध बाबू नाम के व्यक्ति की माँ है । प्रमोद चौका ।, क्योंकि वे उनके परिचित थे जो किताबे बेचते हैं और पढते भी है । पर सो एक मारवाडी सेठ के गुमाश्ते यहाँ गरीबों की गणना करने आये थे । उन्हें बाबूने कहा ` लेकिन किसने कहाँ कि मैं गरीब हूँ ? और यदि हूँ भी,तो आपको इससे मतलब ?` यह ढोंग यही नहीं चलेगा । अपने सेठ से कहो मदद करनी है तो सडक पर लाखों भूखे नगे तडप-तडप कर प्राण दे रहे हैं ।` तुम्हारे सेठों ने ही यही हालत जनता की कि है ।

प्रमोद ने होमियोपैथी की है उसे लेकर सुधीर बाबू के घर जाते हैं और माँ को देखते हैं । प्रमोद गोली और दवाई वृध्दा के मुँह में डालता रहता है । पर वह होश में नहीं आती । बाबू कहते हैं, यह बंगाल के घर-घर की कहानी है । अनाज के कारण आज शस्यश्यामला बंगभूमि पर मौतके बादल मंडरा रहे हैं । विश्वसुन्दरी नगरी भीखमंगों और भूखों के आर्तनाद से गूंज उटी है । भविष्य के नागरिक कौडी मोल बिक रहे हैं । यौवन वेश्याओं की हाट में लुट रहा है । लेकिन मित्रों मेरी माँ ने आज एक दुष्कर्म किया है और वह मैं उससे पूछना चाहता हूँ कि क्या सचमुच तुमने भीख मांगी थी माँ ? माँ चावल लाने के लिए गयी तब एक

युवती ने कहा था " माँ, इस बच्चे को लेकर मुझे एक मुट्ठी चावल दे दो । मैं इसे पाल नहीं सकूँगी । सब को इसी तरह बेच चुकी, पर पापी पेट की ज्वाला...."[६३] माँ ने उसे चावल दिया तभी भीख मंगों की एक भीड ने उसे कुचल डाला । उसी संज्ञा हीन अवस्था में मैं उसे यहाँ ले आया । मैं उसको एक बार पूछना चाहता हूँ कि क्या वह सचमुच सेठ के पास भीख माँगने गयी थी ? प्रमोद ने कहा,' खेद है सुबोध बाबू, माँ अब इस लोक में नहीं है ।' बाबू कहते है,' मित्रों दया करके आप इस घटना का जिक्र किसी से न करना ।

इस कहानी में आर्थिक, सामाजिक और भ्रष्टाचार का स्पष्ट अंकन हुआ है। इसमें बंगाल के अकाल का चित्रण है । समाज के धनी लोग गरीबों पर अन्याय करते हैं। वे उन्हें चैन से जीने नहीं देते । उनके पास अनाज होने के कारण वे गरीबों पर अन्याय करते हैं । रोटी कपडा और मकान यही मनुष्य को आवश्यक है । वह इसके सिवा जी नहीं सकता ।

निष्कर्ष

सारांश रूप में विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में पारिवारिक जीवन का विस्तृत चित्रण हुआ है । व्यक्ति और परिवार में संबंधित सभी विषय उनकी कहानियों के कथाबीज बन चुके हैं । प्रेम के विविध प्रकार जैसे शारीरिक और मानसिक उसकी दृढता के साथ साथ विवाह में स्त्री के सौन्दर्य का महत्व, विवाह में जात-पात, धर्म की बाधा, पुनर्विवाह की आवश्यकता, पति-पत्नी के प्रेम का स्वरूप, आदर्श पत्नी का रूप, पति-पत्नी में संघर्ष के विविध कारण, विवाहपूर्व तथा विवाहोत्तर प्रेम का चित्रण, देवर-भाभी का प्रेम, स्त्री, पुरुष के बीच मान-मार्यादा और पदोन्नति के लिए पत्नी के सौन्दर्य और जवानी का दुरुपयोग, हिन्दू विधवा की करुणापूर्ण अवस्था, आधुनिक नारी में विद्रोह की प्रवृत्ति, आज के परिवार में वृध्दों का स्थान आदि विविध विषयों को विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है ।

संदर्भ

१ विष्णु प्रभाकर - धरती अब भी घूम रही है धरती अब भी घूम रही है, पृ.१२-१३

२	वही	वही	रहमान का बेटा	पृ.३०
३	वही	वही	गृहस्थी	पृ.३६
४	वही	वही	वही	पृ.४०
५	वही	वही	वही	पृ.४४
६	वही	वही	वही	पृ.४४
७	वही	वही	नाग-फाँस	पृ.४७
८	वही	वही	वही	पृ.५५
९	वही	वही	वही	पृ.५५
१०	वही	वही	ठेका	पृ.७२
११	वही	वही	वही	पृ.७५
१२	वही	वही	जज का फैसला	पृ.८२
१३	वही	वही	कितना झूठ	पृ.८७
१४	वही	वही	वही	पृ.९३
१५	वही	वही	अधूरी कहानी	पृ.९८
१६	वही	वही	वही	पृ.१०१
१७	वही	वही	आश्रिता	पृ.१०६
१८	वही	वही	वही	पृ.११५
१९	वही	वही	मेरा बेटा	पृ.१२६
२०	वही	वही	अभाव	पृ.१३६
२१	वही	वही	हिमालय की बेटी	पृ.१४३
२२	वही	वही	वही	पृ.१४९
२३	वही	वही	चाची	पृ.१५४
२४	वही	वही	शरीर से परे	पृ.१६४

२५	विष्णु प्रभाकर -	साँचे और कला	स्वर्ग और मर्त्य	पृ.८
२६	वही	वही	नई ज्यामिति	पृ.३६
२७	वही	वही	कैक्टस के फूल	पृ.४६
२८	वही	वही	छोटा चोर बडा चोर	पृ.६५
२९	वही	वही	समझौता	पृ.८६
३०	वही	पुल टूटने से पहले	पुल टूटने से पहले	पृ.१५
३१	वही	वही	मटकन और मटकन	पृ.२२
३२	वही	वही	वही	पृ.२७
३३	वही	वही	एक मौत समंदर किनारे,	पृ.४३
३४	वही	वही	एक रात : एक शव	पृ.५२
३५	वही	वही	बेमाता	पृ.७१
३६	वही	वही	वही	पृ.७२
३७	वही	वही	राजम्मा	पृ.७९
३८	वही	वही	फासिल,इन्सान और	पृ.८७
३९	वही	वही	वही	पृ.९०
४०	वही	वही	वही	पृ.४०
४१	वही	वही	ढोलक पर थाप	पृ.१००
४२	वही	वही	बस,इतना भर ही	पृ.१०६
४३	वही	वही	एक अनचीन्हा इरादा	पृ.११९
४४	वही	वही	भोगा हुआ यथार्थ	पृ.१२२, १२३
४५	वही	वही	राग और अनुराग	पृ.१४९
४६	वही	वही	सलीब	पृ.१५६
४७	वही	वही	अँधेरे आँगन वाला मकान	पृ.१६३
४८	वही	वही	वही	पृ.१७१
४९	वही	वही	वही	पृ.१७१

५०	विष्णु प्रभाकर -	एक और कुन्ती	सत्य को जीने की राह	पृ.७
५१	वही	वही	अेक और कुन्ती	पृ.१३
५२	वही	वही	तूफान	पृ.३६-३७
५३	वही	वही	चन्द्रलोक की यात्रा	पृ.४१
५४	वही	वही	वही	पृ.५१
५५	वही	वही	तिरछी पगडंडियाँ	पृ.६०
५६	वही	वही	वही	पृ.६१
५७	वही	वही	वही	पृ.६३
५८	वही	वही	पिचका हुआ केला	पृ.६८
५९	वही	वही	मंजिल	पृ.८६
६०	वही	वही	चिरन्तन सत्य	पृ.९३
६१	वही	वही	वही	पृ.९५
६२	वही	वही	राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा	पृ.१०२
६३	वही	वही	भूख और कुलीनता	पृ.११४